चतुर्वेदी चन्द्रिका

सभापति की कलम से	02
संपादकीय	03
श्री हनुमते नम :	05
स्मरण शक्ति बढ़ाने के सरल उपचार	08
बच्चों की दुनिया	09
महाकवि बिहारी लाल	11
डालडा	13
नक्षण तथा मूल नक्षत्र दोष	14
किशोर और संस्कार	16
जिंदगी की जिंदादिली...	18
चल गई	18
ऊर्जा के स्पंदन है- एकादश रूद्र	22
माँ	23
आओ कंधे से कंधा मिलाएं	25
संस्मरण	26
शाखा समाचार	27
समाज समाचार	29
दिवंगत स्वजन	32

अंक 04
अप्रैल 2020, वर्ष - 21

सभापति
श्री कमलेश चन्द्र पांडेय
मोबा. 08800956833

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मण्डल
श्रीमती विनिता चौबे (भोपाल)
श्री संतोष चौबे (भोपाल)
डॉ. दिवाकरनाथ चतुर्वेदी (भोपाल)
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी (लखनऊ)

संपादक
डॉ. कुश चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता :
'चतुर्वेदी चंद्रिका', 3 रंगरेजन टोला,
छिपेटी, इटावा (उत्तरप्रदेश)
मोबा. 9411938577
ई-मेल kshchaturvedi8@gmail.com

व्यवस्थापक
शशांक चतुर्वेदी

वेबसाइट : www.chaturvedi-chandrika.com
www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चन्द्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा इटावा अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
सत्र + वार्षिक सदस्यता शुल्क- 101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक डॉ. कुश चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को प्रत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

सभापति की कलम से

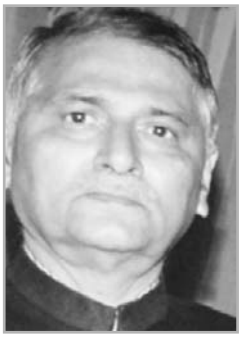

– कमलेश चन्द्र पांडेय
Email : sabhapati.mahasabha@gmail.com

सभी भाई बहनों को सादर पालागन

महासभा सभापति निर्वाचन समाज की गरिमा के अनुरूप संपन्न हो गया। जिसकी घोषणा नियमानुसार आगामी कार्यकारिणी में दिनांक 19 अप्रैल 2020 को की जावेगी। यह अत्यंत सुखद इसलिए भी है कि यह सुयोग शताब्दी वर्ष के पश्चात् सभा के नव शताब्दी वर्ष में हुआ। यह अनुकरणीय रहेगा ऐसी कामना है। पूरा समाज इसके लिए साधुवाद का अधिकारी है।

आज मैं महासभा की प्रासंगिकता पर चर्चा करुँगा और चाहूँगा कि समाज के चिंतक भी इस पर अपना चिंतन मनन कर समाज का मार्ग दर्शन करें। समाज के कुछ तथाकथित बौद्धिक और मुखर व्यक्ति प्रश्न करने लगे है कि महासभा से समाज को क्या फायदा? यह समाज को क्या देती है? कल्पना करे कि यदि महासभा न हो तो समाज को एक सूत्र में बांधने का क्या माध्यम होगा? पहले हम समूहों में गाँवों में रहते थे। और सभी मुख्य गाँव आसपास होने से हम सब एक दूसरे के संपर्क में थे। अब ऐसा नहीं है। हमारा गाँवों से संपर्क समाप्त प्राय है। कुछ तो गांव ही नेस्तनाबूद हो चुके है। फिर हम कैसे जुड़े रह सकेंगे? हमारा छोटा सा समाज आम मिलन बिंदु /स्थल के आभाव में इस विराट संसार में विलीन ही हो जावेगा। पहले भी हमारे अन्य बांधव जो ब्रज क्षेत्र से अधिक दूर अन्य कँही चले गए। आज उनका हमें अता पता नहीं है। यही हाल हमारा भी हो सकता है। महासभा ही एक केंद्र है, जो समाज को एक सूत्र में पिरोये रखने का एक मात्र साधन है। जो भी है, जैसा भी है, हमें इसे बनाये रखना है और सुदृण करते रहना है। 3 वर्ष में एक महासभा अधिवेशन, एक वर्ष में भिन्न भिन्न स्थानों पर चार कार्यकारिणी की बैठक। समाज के सम्बन्ध में विचार विमर्श कर समाज के प्रतिनिधियों के माध्यम से समाज से संपर्क व संवाद बनाये रखते है। महासभा का मुख पत्र चतुर्वेदी चन्द्रिका अपने संवाद से समाज को एकीकृत रखने में निसंदेह अपना योगदान कर ही रही है। महासभा से समाजहित न केवल प्रासंगिक है बल्कि समाज के सह अस्तित्व के लिए आज आवश्यक भी है ।

उपरोक्त के अतिरिक्त महत्वपूर्ण विषय से आप सब भलीभांति परिचित ही है। आज सारा विश्व भयंकर महामारी कि चपेट में है। हमारा भारत भी इस चपेट में है। इस लेख के लिखने तक स्थिति नियंत्रण में दिख रही है, किन्तु अगले 15 दिन अर्थात पत्रिका आप तक पहुंचने तक क्या स्थिति होगी कहा नहीं जा सकता। अगले 15 दिन से एक माह बहुत ही संवेदनशील है। ईश्वर कृपा और हमारा आपका सामूहिक प्रयास व बचाव ही हमें इस संकट की घड़ी में पार लगावेगा। हम सब को राज्य से मिलाने वाले दिशा निर्देशों का पूर्ण निष्ठा और गंभीरता से अक्षरश: पालन करना होगा। सामूहिक क्रिया कलापों और आयोजनों से दूर रहना ही होगा। देश और समाज हित में सामूहिक समारोहों को स्थगित ही कर देना होगा। चाहे वह कैसे भी और कोई भी समारोह क्यों न हो। अतिउत्साह और जरा सी लापरवाही घातक हो सकती है। शुद्धता और पवित्रता के हमारे संस्कार भी हमारा बचाव कर सकेंगे ऐसा विश्वास है। ईश्वर से कामना करता हूँ कि सभी स्वस्थ व सुरक्षित रहे।

अपने समाज में प्रतिभाओं का कभी अभाव नहीं रहा। अपने कार्यकाल के दौरान विविध क्षेत्रों की प्रतिभाओं से संपर्क सुखद रहा। अनेक बांधवों की उपलब्धियों ने हमें गौरवान्वित भी किया। विभिन्न नगरों ,गांवों, महानगरों में लोगों से जो आत्मीयता मिली उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। जहां भी जाना हुआ। लोगों का असीम स्नेह मिला। महासभा परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनका सक्रिय सहयोग हमें निरन्तर मिला। आदरणीय दोनों संपादक विनीताजी व कुश भाई अपनी कार्यकारिणी,सभी उपसभापति जी, मंत्री जी, सभी संयुक्त मंत्रीगण, कोषाध्यक्ष जी,व्यवस्थापक जी सभी के साथ साथ अपने मार्गदर्शक संरक्षक मंडल के प्रति भी मन से आभारी हूँ। जिनका भरपूर स्नेह मुझे मिला। चतुर्वेदी चंद्रिका के महासभा और पत्रिका का विभिन्न प्रकार से सहयोग करने वाले प्रत्येक बांधव के प्रति भी आभारी हूँ। हम सबको मिलकर देश और समाज के उत्थान में यथाशक्ति योगदान देना है। यह भाव और गति बनी रहनी चाहिए। रॉबर्ट फ्रास्ट की पंक्तियों का सुमन जी के अनुवाद को उद्धृत करते हुए

सादर पालागन

गहन सघन मनमोहक वन तरु मुझको आज बुलाते हैं ।
किन्तु किये जो वादे मैंने याद मुझे आ जाते हैं ।।
अभी कहाँ विश्राम वदा यह मूक निमंत्रण छलना है।
अरे अभी तो मीलों मुझको मीलों मुझको चलना है।।

संपादकीय

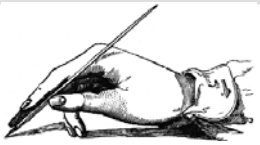

नवसंवत 2077 विक्रमी हम सबको मंगलकारी हो। जीवन में एक वर्ष का जाना और दूसरे नये वर्ष का आना बहुत महत्वपूर्ण होता है। सही मायने में यही हमारा नववर्ष है। जब हमें नूतनता का बोध होता है। मौसम बदलता है,नया आर्थिक सत्र होता है,नया शिक्षा सत्र आता है,फसल बदलती है अर्थात हर कोण से नयापन है। यह विसंगति ही है कि हम अपने नए साल का स्वागत उस शैली में नहीं कर पाते। जिस तरह आंग्ल नववर्ष का करते हैं। नवरात्र और रामनवमी का पर्व हमारी परम्परा में बहुत महत्व रखते हैं।

यह दु:खद है कि हमारे पड़ोसी देश चीन के एक घातक वायरस ने पूरी दुनियाँ को हिलाकर रख दिया। जिन्दगी थमने लगी तो गति मन्द हुई। हमारे देश में भी इसका दुष्प्रभाव है। प्रभु सबकी रक्षा करे। स्वच्छता हमारी आदत में हैं,हाथ मिलाने की नहीं हाथ जोड़कर अभिवादन की हमारी संस्कृति है। पूर्वजों ने हमें मासांहार से सदैव दूर रहने की स्वस्थ्य परम्परा दी है। हम तो वह लोग हैं जो प्याज लहसुन को भी रसोई से दूर रखते हैं इसलिए हमें घबराने की आवश्यकता नहीं बस सावधान रहने की जरूरत है। हम तो हवन,यज्ञ की परंपरा वाले लोग हैं। वेदी से प्रज्ज्वलित लौ और धुंआ परिवेश को पवित्रता प्रदान करता है। अग्नि की महिमा अपरम्पार है। ऋग्वेद में कहा गया है--

त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु न:सहसावन्नवधात .....

अर्थात हे अग्नि तुम हिंसक से हमारी रक्षा करो,पाप से बचाओ।

समाज में होली मिलन के कार्यक्रम खूब जोर शोर से हुये। होना भी चाहिए। चंद्रपुर में चैती अष्टमी के दिन कैमर बाबा पर मेला लगता है। इस बार वहाँ वृद्धजन सम्मान समारोह भी हुआ। ऐसे आयोजन प्रेरक होते हैं। महाराष्ट्र से दुष्यन्त जी का विधान परिषद और प्रियंका जी का राज्यसभा में जाना गौरव का विषय है। दोनों को अशेष मङ्गल कामनायें। राष्ट्रीय क्रिकेटर सुनील चतुर्वेदी का अंतर्राष्ट्रीय रेफरी के रूप सौ मैच पूरे करके नया कीर्तिमान स्थापित करना गर्व का विषय है। उन्हें बहुत बहुत बधाई।

महासभा के सभापति जी का कार्यकाल पूर्ण हो रहा है। आदरणीय कमलेश पाण्डेय जी सहजता,सरलता और सादगी की त्रिवेणी के अक्षय स्रोत हैं। अपने पूरे कार्यकाल के दौरान उन्होंने संपादकीय मानदंडों का मान रखते हुए पत्रिका के सहज प्रवाह में कभी हस्तक्षेप नहीं किया। अपनी बात को सविनय कहने की कला उनसे सीखी जा सकती है। हमें आशा है कि उनका सक्रिय योगदान समाज को आगे भी मिलता रहेगा। हमें विश्वास है कि हम नये सभापति, नई कार्यकारिणी और नये संपादक के साथ प्रगति पथ पर अवश्य अग्रसर होंगे।

दसवीं और बारहवीं बोर्ड परीक्षा के 75 प्रतिशत अथवा उससे अधिक पाने वाले विद्यार्थी अपना विवरण,अंकपत्र प्रति तो भेजें ही साथ में जो फोटो लगाएं वह इस तरह खिंचवाई जाए कि फोटो में ही हिन्दी में नाम, प्रतिशत और स्थान का नाम अवश्य आ जाये। इससे हमें सहजता रहेगी। अब छुट्टियों का दौर आ रहा है। बच्चे कुछ अच्छी सी कहानियां, कवितायें लिखें, अच्छे से चित्र उकेरें। कहीं जायें तो वहां का वर्णन लिखें। अपने अथवा नानी के घर जायें तो वहां क्या क्या अच्छा लगा हमें लिखकर जरूर भेजें। अभिभावक उन्हें प्रोत्साहित करें। यह अपने बच्चों में लेखन के संस्कारों का बीजारोपण होगा। पत्रिका के निखार में क्या और होना चाहिए हमें आपके मार्गदर्शन की प्रतीक्षा रहेगी। श्री वैंकटेश मंदिर इटावा का यह स्थापना दिवस का माह भी है। मंदिर की स्थापना श्री वैष्णव सम्प्रदाय के उदभट विद्वान स्वामी लक्ष्मी प्रपन्नाचार्य जी ने वैशाख शुक्ल दसवीं संवत 1945 में की थी। हम इस बार मुखपृष्ठ पर मंदिर का चित्र दे रहे हैं।

(कुश चतुर्वेदी)

कार्यकारिणी बैठक की सूचना

दिनांक 23 अप्रैल 2013 को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के अधिवेशन में स्वीकृत यथा संशोधित संविधान की धारा 11(8) के अनुपालन हेतु तथा सभापति पद के चुनाव के लिए चतुर्वेदी चंद्रिका के फरवरी 2020 तथा मार्च 2020 के अंक में प्रकाशित अधिसूचना के अनुसार महासभा कार्यकारिणी की आगामी बैठक प्रात: 11 बजे से 19 अप्रैल 2020 क़ो दिल्ली में आयोजित की जायेगी। अपने आगमन की अग्रिम सूचना शीघ्र भेजने की कृपा करे।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
9871170559

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी

संरक्षक सदस्य : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), पूर्व सभापति श्री भरत चतुर्वेदी (भोपाल), पूर्व सभापति श्री राजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी ''रज्जन'' (कोलकाता), श्री त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी (दिल्ली), पूर्व सभापति श्री राजेन्द्र आर. चतुर्वेदी (मुंबई), श्री विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोयडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता)

कार्यकारिणी

सभापति– श्री कमलेश चन्द्र पाण्डेय (नोयडा), उपसभापति–श्री अविनाश चन्द्र चतुर्वेदी (कानपुर), श्री सुधीर चतुर्वेदी (नोयडा), डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (नई दिल्ली) पदम चतुर्वेदी (लखनऊ), सचिव– श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी (नोयडा), सहसचिव–श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), कोषाध्यक्ष – श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी (दिल्ली)

माननीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री कैलाशचन्द्र चतुर्वेदी (कासगंज), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), श्री नीरज चतुर्वेदी (डिण्डौन), श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (नागपुर), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी ''अन्नी'' (इलाहाबाद), श्री करूणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर), श्री प्रदीप चतुर्वेदी ''लालन'' (आगरा), डॉ. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी ''चुनचुन'' (बरेली), श्री भुवनेश कुमार चतुर्वेदी (गोंदिया), श्री संदीप चतुर्वेदी (बनारस), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्री दिलीप चतुर्वेदी ''सिकंदरपुरिया'' (लखनऊ), श्री गणेशचंद्र चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री प्रदीप चतुर्वेदी ''संजू'' (गाजियाबाद), श्री अशोक चतुर्वेदी (फरीदाबाद), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री भारतेन्दु कुमार चतुर्वेदी ''पंकज'' (मुम्बई), श्री अमित चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), डॉ0 कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री पृथ्वीनाथ चतुर्वेदी (कानपुर), श्री सुमंत चतुर्वेदी (आगरा) श्री प्रणव चतुर्वेदी (कानपुर), श्री ललित किशोर चतुर्वेदी (कोटा), श्री आलोक चतुर्वेदी (इलाहाबाद), डॉ. राजीव कुमार चतुर्वेदी (पूणे) श्री सुधीर चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री देवेन्द्रनाथ चतुर्वेदी (लखनऊ)

संपादक– डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), आडिटर–श्री आर.एन. चतुर्वेदी (दिल्ली)

स्थाई आमंत्रित सदस्य – डॉ. निशीथ चतुर्वेदी (गुड़गांव), श्री योगेशनाथ चतुर्वेदी ''जुग्गन'' (इंदौर), श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल), श्री कौशल चतुर्वेदी (नई दिल्ली), श्री विपिन पाण्डे (गाजियाबाद), श्री कमलेशचन्द्र रावत, (कोटा), श्री वी.एस. पाण्डे (नोयडा), श्री हरेशचन्द्र मिश्रा (मैनपुरी), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री सर्वेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री सुबोधचन्द्र चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती समता चौबे (दौसा, राजस्थान)

विशेष आमंत्रित सदस्य– नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री तरूण चतुर्वेदी (भोपाल), श्री अशोक चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्रीमती वंदना चतुर्वेदी (पूणे), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री हरीश चतुर्वेदी (कोटा), श्री अजय चौबे (भोपाल), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (जयपुर), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिवनारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री प्रशांत चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री भुवनेशचन्द्र चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री मनोज चतुर्वेदी ''सीमेन्ट वाले'' (आगरा)

महिला प्रकोष्ठ – श्रीमती पूजा चतुर्वेदी (मुम्बई), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती गीता चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्रीमती सुनीलम चतुर्वेदी (ग्वालियर), डॉ. रजत चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती सरिता चतुर्वेदी (मुम्बई)

युवा प्रकोष्ठ – श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी (साहिबाबाद), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुड़गांव), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री प्रत्यूषकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिण्ड)

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा)

कार्यालय का पता – 405–406, चिरंजीव टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली – 110019

श्री हनुमते नमः

■ चित्रा चतुर्वेदी, बीमा कुंज, भोपाल

अतुलित बलधामम ,हेमशैलाभदेहम।
दनुजवन कृशानुं ,ज्ञानिनामग्रगण्यं।।
सकलगुण निधानम ,वानराणामधीशं।
रघुपतप्रिय भक्तं वातजातं नमामि।।

हनुमान जी को बल बुद्धि विद्या शौर्य और निर्भयता का प्रतीक माना गया है। संकटकाल में हनुमान जी का ही स्मरण किया जाता है अत : वह वह संकट मोचन कहलाते हैं। ज्योतिषियों की गणना के अनुसार बजरंगबली का जन्म चैत्र पूर्णिमा को मंगलवार के दिन चित्रा नक्षत्र व मेष लग्न के योग में हुआ था। हनुमान जी के पिता सुमेरु पर्वत के वानरराज राजा केसरी थे और माता का नाम अंजनी था ।हनुमान जी को पवन पुत्र के नाम से भी जाना जाता है और उनके पिता वायु देव भी माने जाते हैं हनुमान जी भारतीय महाकाव्य रामायण में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में हैं। कुछ विचारों के अनुसार भगवान शिव के 11वें रुद्रावतार सबसे बलवान और बुद्धिमान माने जाते हैं।

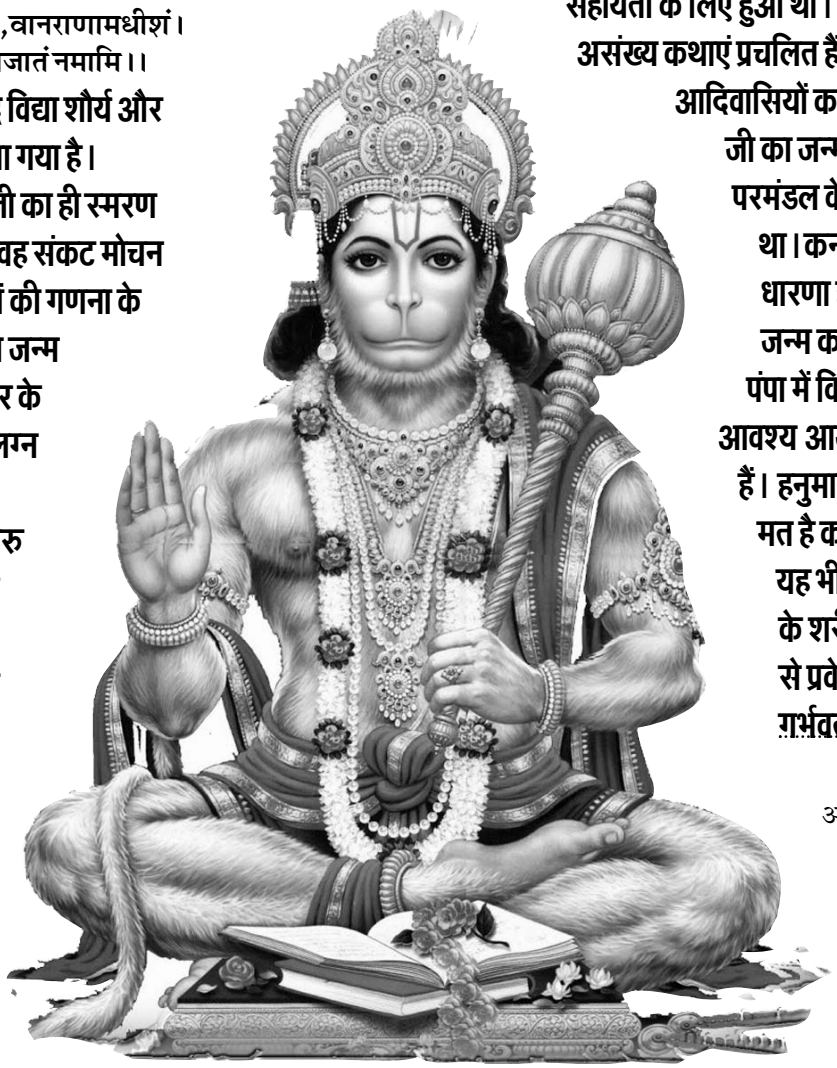

रामायण के अनुसार यह सीता माता के अत्यधिक प्रिय है इस धरा पर जिन 7 मनीषियों को अमरत्व का वरदान प्राप्त है उनमें श्री हनुमान भी एक हैं। हनुमान जी का अवतार भगवान राम की सहायता के लिए हुआ था। उनके पराक्रम की असंख्य कथाएं प्रचलित हैं। छोटा नागपुर क्षेत्र के आदिवासियों का कहना है कि हनुमान जी का जन्म रांची जिले के गुमला परमंडल के ग्राम अंजन में हुआ था। कर्नाटक वासियों की धारणा है कि हनुमान जी का जन्म कर्नाटक में हुआ था। पंपा में किष्किंधा के ध्वंस आवश्य आज भी देखे जा सकते हैं। हनुमान जी के विषय में कई मत है कई मतों में एक मान्यता यह भी है की वायु ने अंजनी के शरीर में कान के माध्यम से प्रवेश किया और वह गर्भवती हुई।

एक अन्य कथा के अनुसार महाराज दशरथ ने पुत्र श्री यज्ञ से प्राप्त जो हवी अपनी रानियों में बाटी उसका एक भाग गरुड़ उठा ले गया था और उसे उस स्थान पर गिरा दिया जहां अंजनी पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या कर रही थी, उसे खा लेने से अंजनी गर्भवती हो गई और हनुमान जी का जन्म हुआ। इसी संबंध में एक और कथा के अनुसार अंजनी ने पुत्र प्राप्ति के लिए कठोर तप किया उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने उन्हें वरदान दिया और कहा कि उनके एकादश रुद्रो में से एक अंश उन्हें पुत्र के रूप में प्राप्त होगा, शिवजी ने उन्हें जाप करने के लिए एक मंत्र देकर कहा कि उन्हें पवन देवता के प्रसाद के रूप में एक सर्वगुण संपन्न

पुत्र की प्राप्ति होगी। महाकाव्य 'रामायण' के अनुसार हनुमान बाबा को वानर के मुख वाले अत्यंत बलिष्ठ पुरुष के रूप में दिखाया जाता है। इनका शरीर अत्यंत बलशाली है इनके कंधे पर जनेऊ लटका रहता है। हनुमान जी को मात्र एक नीचे की ओर वस्त्र पहने अनावृत शरीर मैं दिखाते हैं। शीश पर स्वर्ण मुकुट और शरीर पर स्वर्ण आभूषण। उनकी वानर के समान लंबी पूछ भी दिखाई जाती है। मुख्य अस्त्र गदा मानी जाती है। कहते हैं हनुमान जी की आराधना से ग्रह दोष शांत होते हैं। हनुमान जी और सूर्य देव एक दूसरे के स्वरूप हैं उनकी परस्पर मैत्री प्रबल मानी गई है। इसलिए हनुमान साधना करने वाले साधकों में सूर्य तत्व अर्थात आत्मविश्वास और तेजस्विता आदि ही आ जाते हैं।

जीवन में शक्ति और सिद्धि की कामना के लिए हनुमान जी की पूजा अचूक मानी जाती है। सीता माता का हनुमान जी को आशीर्वाद है, अजर अमर गुणनिधि सुतहोऊ। सीता माता के इस आशीर्वाद ने हनुमान जी को चिरंजीवी बना दिया है। अद्भुत शक्तियों एवं दुर्लभ गुणों के स्वामी होने के कारण वह जागृत देवता के रूप में पूजनीय है। इन गुणों को हम इस प्रकार भी याद करते हैं, 'जय हनुमान ज्ञान गुण सागर जय कपीस तिहूं लोक उजागर'। मंगलवार हनुमान जी का दिन माना जाता है। कहते हैं इस दिन हनुमान जी को याद कर लेने मात्र से कई संकटों के हल दिखने लगते हैं। 'संकट कटे मिटे सब पीरा जपत निरंतर हनुमत वीरा'। जेठ का महीना हनुमान जी की सेवा साधना के लिए अति उत्तम माना गया है।

कई गांवों कस्बों और शहरों में जेठ के मंगल को बहुत उल्लास के साथ मनाया जाता है। भजन पूजन सेवा और भंडारा सब का आयोजन होता है। हनुमत पूजा से मंगल ग्रह संबंधी दोष दूर होते हैं। ऐसी मान्यता है कि हनुमान जी के 12 नामों का स्मरण करने से सफलता और दसों दिशाओं से रक्षा होती है। वह 12 नाम है- अंजनीसुत, हनुमान, वायुपुत्र, महाबल, रामेष्ठ, फाल्गुनसखा, पिन्गाक्ष,अमित विक्रम, उदधिक्रमण, सीताशोक विनाशक ,लक्ष्मण प्राणदाता, दशग्रीव, दरपह। हनुमान जी की पूजा और उनके आशीर्वाद से सभी तरह के कष्ट दूर हो जाते हैं। मंगलवार के दिन हनुमान पूजन सुंदरकांड ,अखंड रामायण कराना अति शुभ माना जाता है। इसके साथ ही हनुमान चालीसा पढ़ने से भी कृपा मिलती है। मंगलवार को चोला चढ़ाना भी उत्तम माना जाता है। हनुमान जी की मूर्ति का सिंदूर यदि आप अपने पास रखेंगे तो आपके पास या आपके घर में नकारात्मक ऊर्जा नहीं आएगी। इसके साथ ही घर में सुख शांति बनी रहेगी। हनुमान जी के पैर का सिंदूर घर में आर्थिक लाभ का सूचक होता है। हनुमान जी की पूजा के बाद बचे गुड़-चने गरीबों,गाय,बंदर को खिलाने से परेशानियों से मुक्ति मिलती है।'ओम नमो हनुमते रुद्रावताराय, बिश्वरूपाय अमित विक्रमाय ,प्रकट पराक्रमाय महाबळाय, सूर्यकोटिसंप्रभाय रामदूताय स्वाहा।'इस शुभ मंत्र का जाप इंसान को स्वस्थ संपन्न ऋण मुक्त और प्रसन्न रखता है। पौराणिक मान्यताओं में बजरंगबली को कलयुग का प्रत्यक्ष देव कहा गया है। ऐसी मान्यता है कि हनुमानजी पृथ्वी पर विचरण करते हैं और अपने भक्तों को संकट से उबारते हैं। ऐसा कोई भी संकट नहीं जिसका निदान बजरंगबली के पास ना हो। भगवान राम के संकट के समय भी हनुमान जी ने ही अपनी वानर सेना की मदद से उनका संकट दूर किया। इन्हीं विशेषताओं के कारण उनका नाम संकटमोचन। पड़ा इनका शरीर एक वज्र के समान है इसलिए बजरंगबली कहा जाता है। एक नाम पवन पुत्र भी है इसका कारण वायु देवता ने उन्हें पालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मारुत का अर्थ है हवा और नंदन का अर्थ है बेटा इनका एक नाम मारुतिनंदन भी है आशीर्वाद प्राप्त है। हनुमान जी को समस्त देवी देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त है।

एक बार सीता माता के यह बताने पर कि उनके सिंदूर लगाने से श्री राम प्रसन्न होते हैं, हनुमान जी ने भी एक बक्सा सिंदूर अपने ऊपर उलट लिया और सीधे श्री राम जी के पास पहुंचे। भगवान राम के पूछने पर कि इस तरह लाल होकर क्यों आए हो? हनुमान जी बोले आप जिस तरह सीता माता की भरी मांग देखकर प्रसन्न होते हैं वैसे ही मुझे पूर्ण रूप से लाल देखकर मुझ पर प्रसन्न रहें और अपनी कृपा मुझ पर बनाए रखें। हनुमान जी जागृत देव हैं और जहां भी रामायण या पूजा होती है वहां उपस्थित हो जाते हैं। राम कथा हनुमान जी को अति प्रिय है। हनुमान जी के कुछ मंदिरों की गणना चमत्कारी मंदिरों के रूप में मानी जाती है। कुछ ऐसे मंदिर हैं जिनके संबंध में कहा जाता है कि वहां जाकर पूजा अर्चना करने से सारी मुरादें पूरी होती है। इन मंदिरों में यह कहीं उल्टे तो कहीं सीधे लेटे हुए हैं।

अपने बचपन में यह सूर्य को फल समझकर खाने चले थे और सूर्य को मुख में दबा लिया था। यह समाचार प्राप्त होते ही इंद्र ने अपनी गदा से इनकी ठोडी पर प्रहार किया जिससे इनकी ठोडी टूट गई। ठोडी को वैसे संस्कृत में हनु भी कहा जाता है। इस घटना के बाद से ही बजरंगबली का नाम हनुमान पड़ गया। हनुमान जी का सिंदूरी रंग में होना उनका श्रीराम का के भक्त होने का प्रतीक है।

एक बार सीता माता के यह बताने पर कि उनके सिंदूर लगाने से श्री राम प्रसन्न होते हैं, हनुमान जी ने भी एक बक्सा सिंदूर अपने ऊपर उलट लिया और सीधे श्री राम जी के पास पहुंचे। भगवान राम के पूछने पर कि इस तरह लाल होकर क्यों आए हो? हनुमान जी बोले आप जिस तरह सीता माता की भरी मांग देखकर प्रसन्न होते हैं वैसे ही मुझे पूर्ण रूप से लाल देखकर मुझ पर प्रसन्न रहें और अपनी कृपा मुझ पर बनाए रखें। हनुमान जी जागृत देव हैं और जहां भी रामायण या पूजा होती है वहां उपस्थित हो जाते हैं। राम कथा हनुमान जी को अति प्रिय है। हनुमान

जी के कुछ मंदिरों की गणना चमत्कारी मंदिरों के रूप में मानी जाती है। कुछ ऐसे मंदिर हैं जिनके संबंध में कहा जाता है कि वहां जाकर पूजा अर्चना करने से सारी मुरादें पूरी होती है। इन मंदिरों में यह कहीं उल्टे तो कहीं सीधे लेटे हुए हैं।

ऐसे ही कुछ मंदिर निम्नलिखित हैं

लेटे हनुमान : धर्म की नगरी इलाहाबाद में हनुमान जी का यह मंदिर पूरी दुनिया में ऐसा इकलौता मंदिर है जहां हनुमान जी की प्रतिमा लेटी हुई है। इस मंदिर को श्रद्धालु हनुमान जी का घर भी कहते हैं। वर्ष में एक बार माता गंगा जल के रूप में हनुमान जी के पांव पखारने आती हैं। ऐसी मान्यता है कि यहां आए भक्तों की सभी मन्नतें पूरी होती हैं। औरंगजेब और उनकी सेना ने हनुमान जी की मूर्ति को हटाने की कोशिश की पर वह इस मूर्ति को टस से मस न कर सके, हारकर सैनिकों को वहां से लौटना पड़ा।

उलटे हनुमान जी : उज्जैन से इंदौर जाने वाले मार्ग में सांवेर नामक गांव में एक ऐसा दुर्लभ मंदिर है जो उलटे हनुमान मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण देवी अहिल्याबाई होल्कर की प्रेरणा से महाराज मल्हार राव होलकर ने करीब 250 वर्ष पूर्व करवाया था। उलटे हनुमान के पीछे एक तथ्य प्रचलित है। रामायण में उल्लेख है कि रावण के कहने पर जब अहिरावण श्री राम और लक्ष्मण को छल कपट से उठाकर पाताल लोक ले गया था, तब हनुमान जी सांवेर के रास्ते से उल्टे होकर पृथ्वी लोक से पाताल लोक गए थे और श्री राम और लक्ष्मण जी को वहां से छुड़ा कर लाए थे। तब से इसका नाम उलटे हनुमान पड़ गया। यह नाम विश्व प्रसिद्ध है। हनुमान जयंती के दिन अपनी मन्नतों के लिए भक्तों की भीड़ यहां उमड़ पड़ती है।

श्री संकट मोचन वाराणसी : यह मंदिर उत्तर प्रदेश के वाराणसी यानी बनारस शहर में है। इस मंदिर के चारों ओर छोटा सा वन है। मंदिर प्रांगण में हनुमान जी की दिव्य प्रतिमा है। ऐसी मान्यता है कि हनुमान जी की यह मूर्ति गोस्वामी तुलसीदास जी के तप और पुण्य से प्रकट हुई थी। इस मूर्ति में हनुमान जी दाएं हाथ से भक्तों को आशीर्वाद और अभय दान दे रहे हैं और बाएं हाथ उनका हृदय पर स्थित है। प्रत्येक कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को सूर्योदय के समय इनकी विशेष आरती होती है।

सालासर बालाजी हनुमान मंदिर : राजस्थान के चुरू जिले में सालासर बालाजी हनुमान मंदिर है। यहां खास बात यह है कि हनुमान जी की प्रतिमा दाढ़ी मूछ वाली है। यह मंदिर हनुमान भक्तों का प्रिय धार्मिक स्थल है। यहां प्रतिवर्ष चैत्र पूर्णिमा और क्वार मास की पूर्णिमा पर बड़े मेलों का आयोजन होता है। कहते हैं इस मंदिर का निर्माण नूर मोहम्मद और दाऊ नाम के दो मुस्लिम कारीगरों ने किया था। मेहंदीपुर बालाजी, यह मंदिर राजस्थान के दौसा जिले में स्थित है। इसकी प्रसिद्धि चमत्कारिक मंदिर के रूप में मानी जाती है। यह मंदिर दो अति सुरम्य पहाड़ियों के बीच की घाटियों में स्थित होने के कारण घाटी मेहंदीपुर भी कहलाता है। यह मंदिर करीब 1000 साल पुराना है। मंदिर में स्थित बजरंग बली की बालरूप मूर्ति स्वयंभू है। बालाजी मंदिर भूत प्रेत आदि बाधा और अन्य ऊपरी बाधाओं के निवारण के लिए प्रसिद्ध है मान्यता है। तंत्र मंत्र और अन्य शक्तियों से ग्रसित लोग भी यहां पहुंचते हैं और बिना किसी दवा औषधि के स्वस्थ होकर वापस लौटते हैं। दुखी कष्ट ग्रस्त व्यक्तियों को मंदिर पहुंचकर देव गणों को पहले प्रसाद चढ़ाना पड़ता है। बाला जी को लड्डू प्रेतराज सरकार को चावल और कोतवाल कप्तान यानी भैरव जी को उड़द दाल का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

पिछले दिनों इंदौर में पित्रेश्वर धाम, यानी पितृ पर्वत पर 72 फुट ऊंची 72 फुट चौड़ी हनुमान जी की मूर्ति स्थापित हुई और उसकी प्राण प्रतिष्ठा की गई। अष्ट धातु निर्मित यह मूर्ति दुनिया की सबसे बड़ी हनुमान मूर्ति है। अंधेरा घिरने के बाद जिस तरह हनुमान जी के पाठ के साथ लेजर लाइट अपनी आभा बिखेर दी है। वह श्रद्धालुओं के बीच खासे उत्साह का कारण है।

कष्टभंजन मंदिर : गुजरात के सौराष्ट्र स्थित गांव के कष्टभंजन हनुमान के दर्शन मात्र से ही किसी भी जातक की भूत प्रेत बाधा ब्रह्मराक्षस बाधा तुरंत दूर हो जाती है। प्रत्येक शनिवार और मंगलवार को यहां इस प्रकार की बाधाओं का निवारण होता है। यह ऐसा मंदिर है जहां शनिदेव महाबली हनुमान जी के चरणों में नारी रूप में है। कहा जाता है कि एक बार हनुमान जी के गुस्से के प्रकोप से बचने के लिए शनि देव को नारी रूप धारण करना पड़ा और वह हनुमान जी के चरणों में शरणागत हो गए। हनुमान जी महिलाओं पर हाथ नहीं उठाते हैं, ना ही क्रोध करते हैं। हनुमान जी ने तुरंत शनिदेव को माफ कर दिया था। कहते हैं जो भी भक्त कष्टभंजन हनुमान जी का दर्शन करते हैं उनके ऊपर से शनि का प्रकोप होता ही दूर हो जाता है। माना यह भी जाता है कि हनुमान भक्तों को शनि देव परेशान नहीं करते। हनुमान जी एकमात्र ऐसे देवता हैं जिनके कारण तीनों लोगों की कोई भी शक्ति अपनी मनमानी नहीं कर सकती। वह साधु संतों के अलावा भगवानों के भी रक्षक हैं। वह परम ब्रहमचारी और ईश्वर तुल्य हैं। हनुमानजी के चमत्कारिक सिद्ध पीठों की संख्या सैकड़ों में है। इन सभी स्थानों पर उनके मंदिर हैं जहां वह गए थे या जहां रह चुके हैं।

जाखू, शिमला के हनुमान जी : समुद्र तल से 8048 फीट की ऊंचाई पर स्थित जाखू पहाड़ी शिमला शहर की बहुत ही खूबसूरत और मनोरम चोटियां हैं। इस चोटी पर स्थित हनुमान मंदिर दुनिया भर के लोगों की आस्था का केंद्र है। यहां देश ही नहीं विदेशी पर्यटक भी अपनी मुरादें लेकर पहुंचते हैं। जाखू मंदिर के प्रांगण में हनुमान जी की 108 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित है। संजीवनी बूटी लेने जाते वक्त हनुमान जी ने यहां पर विश्राम किया था। जाखू पर्वत के जिस स्थान पर वह उतरे थे वहां आज भी उनके पद चिन्ह मौजूद हैं। कहते हैं हमारे देश में नदियों को मां कहते हैं और पत्थरों को भी हम पूजते हैं। लोगों की श्रद्धा भक्ति यहां तक देखने को मिलती है कि पेड़ के नीचे रखकर किसी पत्थर को लाल रंग के ही हम हनुमान मान पूजने लगते हैं, ऐसी है हमारी भक्ति और आस्था।

स्मरण शक्ति बढ़ाने के सरल उपचार

■ अनुपमा चतुर्वेदी

याददाश्त बढाने के उपाय

स्मरण शक्ति की कमजोरी या विकृति से विद्यार्थी और दिमागी काम करने वालों को असुविधाजनक स्थिति से रुबरु होना पड़ता है। यह कोई रोग नहीं है और न किसी रोग का लक्षण है। इसकी मुख्य वजह एकाग्रता (कन्संट्रेशन) की कमी होना है। स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिये दिमाग को सक्रिय रखना आवश्यक है।

शरीर और मस्तिष्क की कसरतें अत्यंत लाभदायक होती हैं। किसी बात को बार-बार रटने से भी स्मरण शक्ति में इजाफ़ा होता है और वह मस्तिष्क में दृढ़ता से अंकित हो जाती है। आजकल कई तरह के विडियो गेम्स प्रचलन में हैं । ये खेल भी मस्तिष्क को ताकतवर बनाने में सहायक हो सकते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पहेलियाँ हल करने से भी मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है।

1) बादाम 9 नग रात को पानी में गलाएं। सुबह छिलके उतारकर बारीक पीस कर पेस्ट बना लें। अब एक गिलास दूध गरम करें और उसमें बादाम का पेस्ट घोलें। इसमें 3 चम्मच शहद भी डालें। मामूली गरम हालत में पीयें। यह मिश्रण पीने के बाद दो घंटे तक कुछ न लें। यह स्मरण शक्ति वृध्दि करने का जबर्दस्त उपचार है। दो महीने तक करना ठीक रहेगा।
2) ब्राह्मी दिमागी शक्ति बढ़ाने की मशहूर जड़ी-बूटी है। इसका एक चम्मच रस नित्य पीना हितकर है। इसके 7 पत्ते चबाकर खाने से भी वही लाभ मिलता है। ब्राह्मी में एन्टी ओक्सीडेंट तत्व होते हैं। जिससे दिमाग की शक्ति घटने पर रोक लगती है।
3) अखरोट जिसे अंग्रेजी में वालनट कहते हैं, स्मरण शक्ति बढ़ाने में सहायक है। नियमित उपयोग हितकर है। 20 ग्राम वालनट और साथ में 10 ग्राम किशमिस लेना चाहिये।
4) एक सेवफ़ल नित्य खाने से कमजोर मेमोरी में लाभ होता है। भोजन से 10 मिनिट पहले खाएं।
5) जिन फ़लों में फ़ास्फ़ोरस तत्व पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है वे स्मरण शक्ति बढाने में विशेष तौर पर उपयोगी होते है।अंगूर,खारक, अंजीर एवं संतरा दिमागी ताकत बढ़ाने के लिये नियमित उपयोग करना चाहिये।
6) भोजन में कम शर्करा वाले पदार्थ उपयोगी होते हैं। पेय पदार्थों में भी कम चीनी का प्रयोग करना चाहिये। इन्सुलीन हमारे दिमाग को तेज और धारदार बनाये रखने में महती भूमिका रखता है। इसके लिये मछली बहुत अच्छा भोजन है। मछली में उपलब्ध ओमेगा 3 फ़ेट्टी एसीड स्मरण शक्ति को मजबूती प्रदान करता है। शाकाहारी लोग मछली के बजाय अलसी बीज का पावडर बनाकर तीन छोटा चम्मच भर पानी के साथ लेकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
7) दालचीनी का पावडर बना लें। 10 ग्राम पावडर शहद में मिला कर चाट लें। कमजोर दिमाग की अच्छी दवा है।
8) धनिये का पावडर दो चम्मच शहद में मिलाकर लेने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
9) आँवला का रस एक चम्मच 2 चम्मच शहद मे मिलाकर उपयोग करें। भुलक्कड़ पन में आशातीत लाभ होता है।
10) अदरक ,जीरा और मिश्री तीनों को पीसकर लेने से कम याददाश्त की स्थिति में लाभ होता है।
11) दूध और शहद मिलाकर पीने से भी याददाश्त में बढ़ोतरी होती है। विद्यार्थियों के लिये फ़ायदेमंद उपचार है। 250 मिलिग्राम गाय के दूध में 2 चम्मच शहद मिलाकर उपयोग करना चाहिये।
12) तिल में स्मरण शक्ति वृद्धि करने के तत्व हैं। 20 ग्राम तिल और थोडा सा गुड़ का तिलकुट्टा बनाकर नित्य सेवन करना परम हितकर उपचार है।
13) काली मिर्च का पावडर एक चम्मच असली घी में मिलाकर उपयोग करने से याददाश्त में इजाफ़ा होता है।
14) गाजर में एन्टी ओक्सीडेंट तत्व होते हैं। इससे रोग प्रतिरक्षा प्रणाली ताकतवर बनती है। दिमाग की ताकत बढ़ाने के उपाय के तौर पर इसकी अनदेखी नहीं करना चाहिये।
15) आमरस (मेंगो जूस) मेमोरी बढ़ाने में विशेष सहायक माना गया है। आमरस में 2 चम्मच शहद मिलाकर लेना उचित है।
16) पौष्टिकता और कम वसा वाले भोजन से अल्जाईमर्स नामक बीमारी होने का खतरा कम रहता है और दिमाग की शक्ति में इजाफ़ा होता है। इसके लिये अपने भोजन में ताजा फ़ल-सब्जियां,मछलियां, ओलिव आईल आदि प्रचुरता से शामिल करें।
17) तुलसी के 9 पत्ते, गुलाब की पंखुरी और काली मिर्च नग एक खूब चबा -चबाकर खाने से दिमाग के सेल्स को ताकत मिलती है।
18) गेंहू के जवारे का जूस याददाश्त बढ़ाने के मामले बहुत उपयोगी बताया जा रहा है। इस जूस में थोड़ी शक्कर और 7 नग बादाम का पेस्ट भी मिलाकर पीना अधिक गुणकारी सिद्ध होता है।
19) चाय में भरपूर एन्टी आक्सीडेंट तत्व पाए जाते हैं जो हमारी मेमोरी को धारदार बनाने में सहायक साबित होती है। इसमें पालीफीनोल तत्त्व होता है, जो स्मरण शक्ति बढाता है। दो चाय रोज पीना उचित है।
20) अखरोट एन्टी आक्सीडेंट से भरपूर है। इसमें उच्च कोटि की प्रोटीन होती है। शरीर में मौजूद प्राकृतिक रसायनों को नष्ट होने से बचाने में एन्टी आक्सीडेंट तत्वों की महती भूमिका रहती है। रोजाना अखरोट के सेवन से मेमोरी बढ़ती है।

बच्चों की दुनिया

■ श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी, ग्वालियर

आज सोमवार का दिन था। स्कूल में बच्चों को अनुमति मिली हुई थी कि वे आज के दिन टिफिन में मन – मुताबिक लंच ला सकते हैं। अन्यथा बाकी के 5 दिन सब्जी चपाती के अतिरिक्त कुछ भी लाने की इजाजत नहीं थी। बच्चे आज के दिन बेसब्री से लंच टाइम का इंतजार किया करते थे। राम–राम करके जैसे जैसे चार पीरियड कटते थे। आंखों ही आंखों में ना जाने कितनी बार उत्सुकता जाहिर कर चुके होते। सबसे अधिक उत्सुकता अंशु के टिफिन को लेकर होती थी। उसके पापा प्रत्येक रविवार मिलने आते थे, तो दुनिया – जहान की चीजें बेटे के लिए लेकर आते थे। उन्हीं में से छाँटकर अंशू टिफिन में भर कर ले आता था। लंच शुरू होते ही सभी बच्चे अंशु के आस पास घेरा बना कर खड़े हो जाते। उत्सुकता अपने चरम पर होती। जैसे कोई भानुमति का पिटारा खुलने जा रहा हो। वह था भी बहुत उदार, मिल बांट कर खाने में ही उसे आनंद आता था। उसका टिफिन खत्म होने के बाद ही बाकी बच्चे अपना टिफिन खोलते थे। फिर एक बार शुरू हो जाता था, मिल बाँट कर खाने का दौर।

हमेशा की तरह समय पर लंच की घंटी बजी। रोज की तरह सभी बच्चों ने अंशु के आस पास घेरा बना लिया। पर आज टिफिन को लेकर अंशु के मन में उत्सुकता नहीं थी। सुयश प्रतीक्षा नहीं कर सका, बोल पड़ा अरे यार अब खोल भी ना, क्यों नखरे दिखा रहा है। सुबह से हम सब इंतजार कर रहे हैं। नहीं यार कुछ खास नहीं है। मम्मी ने सैंडविच बना कर दिए हैं, अंशु ने जवाब दिया। अरे क्यों आज तो सोमवार है। कल तेरे पापा मिलने आए होंगे। कल क्या कुछ भी नहीं लाए नंदा बोल पड़ी। नहीं कल मेरे पापा मिलने नहीं आए कहते–कहते अंशू रुआँसा हो उठा। नहीं आए मतलब फिर तो अब एक हफ्ते बाद ही आ पाएंगे। पर क्यों नहीं आए? कुछ तो बताया होगा रिंकू बोल उठा। शनिवार की शाम उनका फोन आया था। जरूरी काम से उन्हें रात की फ्लाइट से चेन्नई जाना था। वह भी बहुत उदास थे। ओह, कई सारे स्वर एक साथ उभरे। यांत्रिक तरीके से लंच निपट गया। आज अंशु के दुख में सभी सहभागी थे। अचानक खाते–खाते मोहित बोला पर एक बात बता तू अपने पापा के साथ क्यों नहीं रहता? हफ्ते में एक दिन मिल सकता है ऐसा क्यों? तुझे बुरा नहीं लगता, मैं तो रात को जब तक पापा से फाइटिंग ना कर लूं नींद नहीं आती। मोहित की बात सुन अंशु की आंखें झिलमिलाने लगी। बोला मैं भी कहाँ चाहता हूँ, पापा से बस एक दिन मिलूँ? मेरा भी मन होता है तुम सब के किस्से उन्हें सुनाऊं। उनके साथ क्रिकेट खेलूं, रात को डर लगे तो चिपक कर सो जाऊँ पर मम्मी बस यही कहती है कि कोर्ट का यही आर्डर है। लंच खत्म हो चुका था। सब बच्चे अपनी अपनी सीट पर पहुँच चुके हैं। सभी बच्चे कक्षा 4 में पढ़ते हैं। उम्र के हिसाब से सभी ज्ञान का प्रदर्शन कर लेते हैं। अंशु के साथ सभी की सहानुभूति है। कक्षा में एक अंशू ही ऐसा है जिसके पापा साथ नहीं

रहते। एक दिन उसी ने सभी को बतलाया था कि उसके मम्मी पापा में डाइवोर्स हो गया है। दोनों अलग-अलग रहते हैं। रूबी ने आँख फैलाते हुए पूछा था, यह डाइवोर्स क्या होता है? बहुत से बच्चे इस शब्द से अनभिज्ञ थे। सबसे सयानी कक्षा में शायद सुधा ही है। तुरंत बोल पड़ी थी मुझे पता है जब मम्मी पापा में खूब लड़ाई होती है तो कोर्ट दोनों को अलग अलग रहने की परमिशन दे देता है। बच्चे या तो मम्मी के पास रहते हैं या पापा के पास।

तभी उसकी बात काटते हुए निशा बोल पड़ी - अच्छा तुझे कैसे पता? हां मुझे पता है क्योंकि मेरी बुआ और फूफा जी में खूब लड़ाई होती थी। इसलिए उनका भी डाइवोर्स हो गया था। मुझे मेरी मम्मी ने बतलाया था। सुधा का सिक्का कक्षा में जम चुका था। सर्वसम्मति से उसे कक्षा में सबसे होशियार मान लिया था।

अंशू ने बात काटते हुए कहा मैंने तो अपने मम्मी पापा को कभी लड़ते नहीं देखा। फिर भी उनका डाइवोर्स क्यों हुआ होगा। जवाब नितिन ने दिया अरे बुद्धू अब रात को तू सो जाता होगा तब लड़ते होंगे। मैंने भी अपने मम्मी पापा को रात में कई बार लड़ते देखा है। हां हो सकता है अंशु बोला। मम्मी एक दिन बतला रही थी कि तेरे पापा तुझको छीनकर ले जाने वाले थे। पर मैं कोर्ट में अड़ गई थी। तेरे बिना मैं कैसे रह सकती थी। क्या तू मेरे बिना रह लेता? मैंने कहा था नहीं मैं आपके बिना नहीं रह सकता। पर मुझे पापा भी तो उतने अच्छे लगते हैं। वे हमारे साथ क्यों नहीं रह सकते। मम्मी ने मेरी बात का कोई जवाब नहीं दिया था।

9-10 वर्ष के मासूम है ये बच्चे। जीवन की जटिलताओं को वे क्या समझे? रिश्तों के बीच बनते बिगड़ते संबंधों के ताप से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। टीवी देख देख कर ज्ञान में इजाफा जरूर हो रहा है। पर बारीकियों से अभी अपरिचित ही हैं। वे तो बस प्यार की भाषा ही समझते हैं। अंशु भी इन पहेलियों को नहीं सुलझा पाता, बालमन ठहरा। बस एक ही बात की तसल्ली रहती है कि पापा हफ्ते में बस एक दिन मिलते हैं। पर और बाकी छह दिन की कसर पूरी कर देते हैं। वह भी सुबह से नहा धोकर उनके आने का इंतज़ार करता है। सच पूछा जाए तो उसे रात को नींद भी नहीं आती। लेटे-लेटे प्लानिंग करता रहता है। कहाँ कहाँ जाएगा, क्या क्या साथ में खाएगा, कौन-कौन सी बातें बतानी है। अपने दोस्तों की बातें करते-करते थकता नहीं है। पापा भी पूरे मनोयोग से उसकी सब बातें सुनते हैं। मम्मी उनकी बातों पर ध्यान नहीं देती है, बस हाँ, हूँ करती रहती है। सुबह चलते समय जैसे-तैसे दूध पी लेता है। पर नाश्ता करने का मन बिल्कुल नहीं होता। मम्मी को उसका यह उत्साह फूटी आँखों नहीं भाता। चलते चलते ना जाने कितनी हिदायतें दे डालती हैं। उस दिन उनका प्यार ना जाने कहाँ चला जाता है। शायद पापा का आना उन्हें पसंद नहीं आता। उस दिन वह उनकी किसी बात का बुरा नहीं मानता। गाड़ी का हॉर्न सुनते ही मम्मी को बाय करके बाहर दौड़ लगा देता है। गाड़ी में बैठने के बाद पीछे मुड़कर देखता है। मम्मी दरवाजे पर उदास खड़ी दिखाई देती है। अंशू उस दिन इन बातों की परवाह नहीं करता। जानता है कि शाम को लौट कर जब मम्मी के गले से लिपट जाएगा, तो उनका क्रोध भी दूर हो जाएगा। इतने उत्साह से वह दिनभर बिताये गए व्यस्त कार्यक्रम के विषय मे मम्मी को बतलाता है। मम्मी हूँ हाँ में जवाब दे देती है। वह कितने उत्साह से बताता है कि पूरे दिन उसने क्या-क्या किया, कहां कहां गया, क्या खाया क्या पिया। नमिता आंटी से भी मिला। वे बहुत अच्छी हैं। अंशु को बहुत प्यार भी करती हैं। उसके लिए ना जाने कितनी स्पेशल चीजें बनाकर रखती हैं। पर भला एक दिन में कितना खा सकता है। वे तो पैक करके देना चाहती हैं। पर पता नहीं पापा क्यों मना कर देते हैं।

नमिता आंटी का जिक्र आते ही मम्मी का चेहरा ना जाने क्यों कठोर हो जाता है। जब वह उनके विषय में कोई बात करता है तो हमेशा कोई ना कोई बहाना बनाकर उसके पास से हट जाती हैं। एक दिन ना जाने क्या सूझी पूछ बैठा अच्छा मम्मी, पापा और नमिता आंटी भी हमारे साथ रहे तो कितना मजा आएगा। मम्मी ने कठोर नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए जवाब दिया था, ऐसा करो तुम भी अपना सामान लेकर वहीं चली जाओ। तुम्हें वही ज्यादा अच्छा लगता है। वही रहना उत्साह के अतिरेक में बोल उठा था और तुम? मेरा क्या है पड़ी रहूंगी अकेली ही, । मम्मी कातर स्वर सुन चौक गया था। अपनी गलती का एहसास हुआ बोला नहीं मैं अपनी मम्मी को छोड़कर कैसे रह सकता हूँ? क्या बिना तुमसे कहानी सुने मुझे नींद आएगी? गलती का प्रायश्चित करते हुए मम्मी को अपनी छोटी-छोटी बाहों में भर लिया था। यह तो सच है दिनभर घूम फिर ले पर रात को मम्मी के बिना एक दिन नहीं रह सकता। कभी कभी अपने दिल की बात मयंक से शेयर कर लेता है। परंतु वह अंशू से उम्र में कुछ बढ़ा और समझदार भी है। वही कभी-कभी दिलासा दे देता है। अब छोड़ यार, ज्यादा परेशान मत हुआ कर। जैसा भी चल रहा है, चलने दे। जब बड़ा हो जाएगा अपने पापा से चुपचाप रोज मिल लिया करना। कौन तेरी मम्मी का पता चल पाएगा। यही ठीक रहेगा सोचते ही अंशू का तरह चेहरा फूल खिल उठता है। एक दिन क्लास में पिंकी बहुत उदास बैठी थी। अंशू ने सोचा होमवर्क करके नहीं लायी होगी। पूँछने पर जोर जोर से रोने लगी। पूरी कक्षा पास सिमट आयी। रोते-रोते बतलाया कल मम्मी - पापा में खूब लड़ाई हुई। मैं जाग उठी थी। चुपचाप सुनती रही। क्या अब उनका भी डायवोर्स हो जाएगा अचानक ही सब उदास हो गए। तभी राहुल ने तालियां बजाई व बोला फिर तो पिंकी तेरे ठाठ हो जाएंगे। तेरे पापा मिलने आएंगे तो अंशु की तरह खूब सारी चीजें लाएंगे। पिंकी बिफ़रते हुए बोली, हूँ मुझे नहीं चाहिए खूब सारी चीजें।

मुझे तो अपने मम्मी पापा दोनों साथ चाहिए। पर यार मैं क्या करूं मैं तो चाहत हूँ मेरे मम्मी पापा में डायवोर्स हो जाएं पर क्या करें पता नहीं इन दोनों में लड़ाई क्यों नहीं होती, संजीदा होते हुए राहुल बोला। उसकी मुख्य मुद्रा देख पिंकी के साथ सभी हंस पड़े। वातावरण हल्का-फुल्का हो गया। तभी कक्षा में बहस छिड़ गई। क्लास में दो ग्रुप बन गए। एक मम्मी पापा के साथ रहने पर सहमत था, तो कुछ बच्चे चाहते कि दोनों में लड़ाई होती है तो अलग रहना ही बेहतर है। अंशु टुकर टुकर सबके चेहरे देख रहा था। वह एकमात्र भुक्तभोगी था। बाकी बचे तो निराधार बातें कर रहे थे। कक्षा में शोर बढ़ता ही जा रहा था। लंच पीरियड खत्म हो चुका था। घंटी की ओर किसी का ध्यान नहीं था। एकमात्र अंशु ही ऐसा था जो अपनी सीट पर बैठ कर अपनी स्तिथी के विषय में सोच रहा था। जितना सोचता उतना ही उलझता जाता था। तभी कक्षा में टीचर का प्रवेश हुआ। सबसे ज्यादा खुशी अंशु को हुई, क्योंकि सभी सवालों से उसे निजात मिल चुकी थी।

महाकवि बिहारी लाल

■ – सतीश चतुर्वेदी, आगरा

महाकवि बिहारी लाल का जन्म सन 1603 में ग्वालियर के पास बसुआ गोविंदपुर गांव में हुआ था। बिहारी जी के पिता का नाम पंडित केशव देव चौबे था। बिहारी जी श्रंगार रस के कवि थे। बिहारी जी सन 1609 से 1618 तक वंदावन रहे। तरुण अवस्था में वे अपनी ससुराल मथुरा पहुंच गए थे। नरसिंह दास जी के कथन पर शाहजहां ने सन 1618 में बिहारी जी को आगरा बुलवा लिया था। बिहारी जी आगरा में अपने भांजे प्रसिद्ध कवि कुलपति मिश्र के पास चारशु गेट में रहे। सन 1620 में शाहजहां ने अपने पुत्र के जन्म उत्सव पर अनेक राजाओं को दरबार में बुलाया था। राजा जयसिंह भी जयपुर से आए थे। उस सभा में बिहारी जी ने जयसिंह की बहादुरी पर 2 दोहे सुनाएं।

यौ दल काढ़े बलक तै, तै जयसिंह भुवाल।
उदर अधास के परै ज्यौं हरि गाइ गुवाल।।
घर घर तुरकिनि हिंदूनी, देती असीस सराहि।
पतिनु शखि चादर चुरी, तै राखी जय साहि।।

जिनको सुनकर राजा जयसिंह बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें जयपुर बुला लिया। जयपुर रहकर उन्होंने बिहारी सतसई के 700 दोहे लिखे। जिन्हें सुनकर राजा जयसिंह हर दोहे पर उन्हें एक अशर्फी प्रदान करने लगे। वहाँ भी उन्हें आगरा मथुरा की याद आती थी। उन्होंने एक दोहा लिखा

सघन कुंज छाया सुखद, शीतल सुरभि समीर।
मनु है जातु अजौ बहै उहि जमुना के तीर।।

उनकी बिहारी सतसई की फारसी, गुजराती, संस्कृत आदि भाषाओं में लगभग 55 टीकाएँ हुई हैं। ऐसा दूसरा कोई कवि नहीं है। बिहारी जी के विषय में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में जो लिखा है। उसका सार इस प्रकार है। श्रृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान बिहारी सतसई का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक एक दोहा हिंदी साहित्य में एक एक रत्न माना जाता है। इसकी पचासौं टीकाएँ रची गई। इन टीकाओं में 45 टीकाएँ तो बहुत प्रसिद्ध हैं। बिहारी सतसई के बाद ही हिंदी में सतसई लिखने की परंपरा पड़ी। बिहारी सतसई पर जितनी टीका लिखी गई हैं। उनमें सबसे प्रसिद्ध बिहारी रत्नाकर है। जो बनारस के प्रसिद्ध साहित्यकार जगन्नाथ दास रत्नाकर की लिखी हुई है। बिहारी के कुछ प्रसिद्ध दोहे जिनका उल्लेख आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में किया है, वह इस प्रकार हैं।

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौह करै, भौहनु हँसै दैन कहै नटि जाइ।।

हिंदी मैं नौ रसों का उल्लेख मिलता है। वे इस प्रकार हैं – करुण रस, हास्य रस, श्रृंगार रस, वीर रस, अद्भुत रस, भयानक रस, वीभत्स रस, रौद्र रस, शांत रस और बिहारी ने दसवें रस की स्थापना की थी। वह है बतरस रस। बतरस का अर्थ यह होता है बातचीत दो व्यक्तियों के बीच होती है। बातचीत के बीच में आनंद प्राप्त होता है। उसे बतरस कहा गया है। इस रस का अर्थ होता है कि आनंद प्राप्त होना। बिहारी जी के अन्य कुछ दोहे इस प्रकार हैं –

1. नासा मोरि नचाई जे, करी कका की सौह।
काँटे सी कसकै ति हिय, गड़ी कटीली भौंह।।
2. तंत्री नाद कवित्त रस, सरस् राग रति रंग।
अनबूढ़ें बूढ़ें, तरे जे बूढ़े सब अंग।।
3. करी फुलेल को आचमन मीठी कहत सराये।
ऐ गंधी मतमंद तू इतर दिखावत काये।।
कनकु कनकु ते सौ गुनी मादकता अधिकाइ।
उहि खाय बौराइ इहि पाऐ ही बौराइ।।

बिहारी रत्नाकर में रत्नाकर जी ने जिन दोहों का उल्लेख किया है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

1. कहत, नटत, रीझत, मितल, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु ही सब बात।।
2. नहि परागु नहि मधुर मधु, नहिं विकासु इहिकाल।
अली कली ही सौ बध्यौ आगै कौन हवाल।।
3. अंग अंग नग जगमगत दीपशिखा सी देह।
दिया बढ़ाऐ हूँ रहे बड़ौ उज्यारौ गेह।।
4. पत्रा ही तिथि पाइयै वा घर कै चहुँ पास।
नितप्रति पूण्योंई रहै आनन ओप उजास।।
5. या अनुरागी चित्त की गति, समुझै नहि कोई।
ज्यौं ज्यौं–जय बूढ़ें स्याम रँग त्यौ त्यौ उज्जलु होई।।
6. चिरजीवौ जोरी, जुरै क्यौं न सनेह गंभीर।
को घटि, ए वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।।

7. तजि तीनथ हरि राधिका तन दुति करि अनुरागु।
   जिहि ब्रज केलि निकुंज मग पग-पग होतु प्रयागु।।
8. सीस मुकट, कटि काछनी, कर मुरली, उर माल।
   इहि बातक मो मन सदा बसौ बिहारीलाल।।
9. लिखन बैठि जाकि सबी गहि गहि गरब गरूर।
   भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।।
10. इही आस अटक्यौं रहतु अलि गुलाब कै मूल।
    हैं हैं फेरि बसंत ऋतु इन डारनु वे फूल।।
11. मीत, न नीति गलीतु है, जौ धरियै धनु जोरि।
    खाऐ खरचै जौ जुरै, तौ जौरियै करोरी।
12. मिली परछांहि जोन्ह सौ रहे दुहुनु के गात।
हरि राधा इस संग ही चलें गली महिजात।।

बिहारी की भाषा ब्रजभाषा है। परंतु उनकी भाषा में पूर्वी, फारसी और उर्दू के शब्द भी पाए जाते हैं। इन भाषाओं का अध्ययन इन्होंने आगरा प्रवास काल में किया होगा। बिहारी सतसई की टीका जिन लोगों ने की है उनमें कुछ नाम इस प्रकार हैं - 1. बिहारी के पुत्र कृष्ण कवि, 2. मैनपुरी के राजा शिवमंगल सिंह, 3. आगरा के पंडित अमृत लाल चतुर्वेदी, 4. पांडेय प्रभु दयाल चतुर्वेदी, 5. पंडित अयोध्या प्रसाद मिश्र।

एक बार हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रामविलास शर्मा ने हमसे पूछा था कि ब्रजभाषा तुम किसे कहते हो। हमने उनको उत्तर दिया। जिसे माथुर चतुर्वेदी घर में बोलते हैं। अब मैं कह सकता हूँ कि ब्रज भाषा शुद्ध वह है जिसे बिहारी ने अपनी सतसई में लिखा है। बिहारी सतसई की जितनी टीकाएँ जिन जिन भाषाओं में हुई है वे सब भी तो ब्रज भाषा में लिखे हुए है। बिहारी के दोहे अपनी भाषा में कैसे लिखें। खड़ी बोली से पहले किसी न किसी रूप में राजस्थान से लेकर बंगाल तक ब्रजभाषा का प्रयोग होता था। बिहारी के सारे दोहों को पढ़कर हम यही कहते हैं कि वे नारी सौंदर्य, प्रकृति सौंदर्य और भक्ति, नीति से भरे हुए हैं। चिर जीवो जोरी जुड़े क्यों ना सुने गंभीर को घटी है ब्रश भानुजा वे हलधर के वीर बिहारी जी की भाषा ब्रजभाषा है परंतु उनकी भाषा में पूर्वी फारसी उर्दू के शब्द भी पाए जाते हैं इन भाषाओं का अध्ययन इन्होंने आगरा प्रवास काल में किया होगा बिहारी सतसई की टीका जिन लोगों ने किए उनमें कुछ नाम इस प्रकार हैं बिहारी जी के पुत्र कृष्ण कवि मैनपुरी के राजा शिवमंगल सिंह आगरा के पंडित अमृत लाल चतुर्वेदी पांडे प्रभु दयाल चतुर्वेदी पंडित अयोध्या प्रसाद मिश्र एक बार हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ रामविलास शर्मा ने हमसे पूछा था कि ब्रजभाषा तुम किसे कहते हो हमने उनको उत्तर दिया जिसे माथुर चतुर्वेदी घर में बोलते हैं अब मैं यह कहता हूं कि ब्रजभाषा से दुआ है जिसे बिहारी ने अपनी सतसई में लिखा है बिहारी सतसई की जितनी टीका ए जिन जिन भाषाओं में हुई हैं वह सभी सब भी तो ब्रज भाषा में लिखे हुए बिहारी के दोहे अपनी भाषा में कैसे लिखें खड़ी बोली से पहले किसी न किसी रूप में राजस्थान से लेकर बंगाल तक ब्रज भाषा का प्रयोग होता था बिहारी के दोहों को पढ़कर हम सब यही कहते हैं उनमें नारी सुंदर प्रकृति सुंदर भक्ति नीति से भरे हुए हैं।

गोष्ठी में पत्नी

- संतोष चौबे, भोपाल

बहुत दिन बाद उस दिन
हम सब गोष्ठी में थे
अपने आपको
बहुत-बहुत खोलने
और इस तरह शायद
बहुत-बहुत छुपाने के लिये
पड़ी हमने कवितायें
जिनमें शांति भी थी
और क्रांति भी
कुछ-कुछ उजाला था
और शायद
कुछ भ्रांति भी
उसने बनाई चाय
किया मित्रों का
मुस्कुरा कर स्वागत
बैठी कुछ देर
हम सबके साथ
फिर उठी अचानक
जैसे आया हो याद
कोई बहुत जरूरी काम
गोष्ठी के बाद
कुछ देर चुप रही
फिर बोली आज बड़े
अजीब से लगे तुम सब

वतन

-पी.एन. चतुर्वेदी, दास, फिरोजाबाद

गुल हमने सजाये हैं चमन हमने बनाया,
रंगीन बहर रंग वतन हमने बनाया।
नफरत से गरज थी न हमें बुग्ज़ ओं हसद से,
दुनिया में मोहब्बत का चलन हमने बनाया।
फूलों की कबा तेरे लिए जान ए बहारॉं,
अपने लिए कांटो का कफन हमने बनाया।
इस देश की धरती से जरा पूछ ले कोई,
मिट्टी को लहू देके चमन हमने बनाया।
कहते हैं बड़े नाज से ये एहले सियासत,
हॉं फक्र के काबिल यह वतन हमने बनाया।
जब रास ना आया हमें इस शहर का माहौल,
गॉंव की तरफ जाने का मन हमने बनाया।
इस वक्त को ए दास चमक हमने अता की,
इस वक्त को सूरज की किरण हमने बनाया।

डालडा

■ जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, वनमाली, भोपाल

आदमी आज डालडा हो गया है अर्थात मूंगफली का जमा हुआ घी जो घी नहीं है लेकिन असली घी के नाम से विज्ञापित होता है। एक दिन शाम को दफ्तर से लौटकर किसी दैनिक के पन्ने पलट कर जी बहला रहा था, कि निगाह डालडा के विज्ञापन पर ठहर गई। विज्ञापन था – डालडा हमेशा ताजा और शुद्ध होता है। इसमें गुण भी अधिक होते हैं। समझदार महिलाएं यह जानती हैं कि डालडा स्वास्थ्यकारी विटामिन ए का उतना ही अच्छा जरिया है, जितना कि घी। मैं दो तीन बार विज्ञापन को पड़ गया और मेरा सोचना प्रारंभ हुआ। जो प्रचार के बल पर डालडा घी बन गया। लाचारी में भले हम सब डालडा खा लेते हैं। भले हम सब व्यवहार में लाकर उसके अभ्यस्त हो चले हो, लेकिन डालडा घी नहीं है। क्या इसे भी भूल जाएं? जैसे सत्य की जय चिल्लाकर हम सब असत्य का ही अपने जीवन में अधिक सहारा लेते हैं। बुराई हम सबके भीतर बनी हुई है, लेकिन इसी कारण बुराई को क्या अच्छाई मान लें। क्या बुराई को प्रचार का सहारा मिल जाए, तो वह अच्छाई हो जाए। जैसे डालडा घी। नील क्षीर के विवेक को लेकर जब मैं गहरे से गहरे उतरता जा रहा था तभी मेरी पत्नी अपने हाथ में डालडा का 10 पौंड वाला चमचमाता हुआ एक मोहर बंद डिब्बा लेकर सामने प्रकट हुई और बोली तुम्हारे दफ्तर चले जाने के बाद ना जाने कौन यह दे गया है। विचारों के छल्ले तोड़फोड़ मेरा मन डालडा के डिब्बे पर और उसके चमचमाते हरे रंग पर लट्टू हो गया था। पत्नी की बात सुनकर मैं बोला यह तोहफा लाने वाले से तुमने उसका नाम नहीं पूछा। मेरी पत्नी बोली, वह नाम बगैर बताए फिर आने को कहकर चला गया। मैंने विनोद के लहजे में पत्नी से बात छेड़ी मगर तुमने उस भले आदमी की समझ पर गौर किया ? दुनिया की सब चीजें छोड़ कर उसे तोहफे में देने के लिए 10 पौंड डालडा का डिब्बा ही बचा। स्त्री ने भी शुद्ध विनोद किया क्यों इसमें क्या हर्ज आदमी को और कैसा तोहफा दिया जाता है। मैंने इस बार पत्नी को मुंहतोड़ जवाब दिया, इसलिए सभी स्त्रियां यह जानती हैं कि डालडा स्वास्थ्य कारी विटामिन ए का उतना ही अच्छा जरिया जितना घी। जरूर वह तोहफा देने वाला कोई अकल मंद होगा। जिसने तोहफे के लिए ऐसी स्वास्थ्यकारी वस्तु तस्दीक की। मैं और मेरी स्त्री इस प्रकार 10 डालडा के चमचमाते मोहरबंद डिब्बे को माध्यम बनाकर चुहलबाज़ी में उलझे थे कि दरवाजे पर किसी ने आवाज लगाई। साहब हैं? साहब थे तो उन्हें कहा कौन है, आइए अंदर चले आइए। जब वे अंदर आ गए तब उनको एक कुर्सी पर बैठाते हुए स्वयं दूसरी कुर्ती पर बैठते हुए मैंने कहा मैंने आपको पहचाना नहीं। कहिए कैसे आना हुआ मेरे। प्रश्न पर सरदार जी ने जेब से कागज का एक पुर्जा निकाल कर मेरे हाथ में थमा दिया। मैंने जब उसे खोलकर पड़ा तो जाना कि वह मेरे एक मित्र द्वारा लिखी सिफारशी चिट्ठी थी। मित्र ने अपने खातिर सरदार जी का कोई काम कर देने के लिए मुझे लिखा था। तब सरदार जी से मैंने पूछा कहिए क्या काम है। देवता अनेक हैं, लेकिन उनकी पूजा का फल एक ही है, आत्मकल्याण। वैसे ही काम अनेक हैं पर उनकी क्रिया में झंझट एकसी है। आदमी के स्वार्थ के लिए कायदे की हदबंदी तोड़ना और उसे मुश्किल से मुक्त कर स्वयं मुश्किल सिर लेना। खैर मित्र बीच में पड़े थे, इसलिए जब सरदार जी अपने कार्य की रूपरेखा बता चुके, तब मैंने उनसे कहा कल फाइल देखूंगा। यदि संभव हुआ तो आपका काम हो जाएगा। लेकिन सरदार जी काम पूरा होने का पक्का वायदा लेकर ही जाने वाले थे, तो बोले यह तो आपके हाथ की बात है। आपकी मेहरबानी हो तो हमारा काम जरूर हो जाएगा। सरदार जी की बात के दो जवाब हो सकते थे एक तो मैं चुप लगा कर बैठ जाऊं दूसरा में अधिक स्पष्ट होकर उन्हें काम होने का आश्वासन दूं। मैंने पहले जवाब से ही काम लिया। लेकिन सरदार जी को उससे संतोष कहां होने वाला था वह इस बार अपनी मुसीबतों का रोना ही ले बैठे। देश के टुकड़े होने से वे बर्बाद हो गए। उनकी लाखों की जायदाद पाकिस्तान चली गई। अब यहां उन्होंने कपड़े और गल्ले का रोजगार शुरू किया। मगर यहां भी चैन नहीं, रोज इंस्पेक्टर जांच को पहुंचते हैं, तंग करते हैं। रोजगार भी आजकल गले की रस्सी हो रहा है। मैंने हंसकर पूछा तो क्या साहब हम भूखे मरे। यह तो लाचारी समझ लीजिए कि हम उसे छोड़ नहीं सकते। मेरे मन में बात आई ठीक इसी तरह जिस तरह कि हम लाचारी में डालडा खाना शुरू करते हैं। मुझे चुप पाकर सरदार जी ने बात जारी रखी। बिना कसूर इंस्पेक्टर ने हमारी रिपोर्ट कर दी। बहुत समझाया उसे पर नहीं माना। अब आप पर ही भरोसा है। मेरी इच्छा हुई कि पूछो दुनिया में केवल मुझे ही उन्होंने भरोसे का पात्र समझने की कृपा क्यों की ? लेकिन मुझे पूछने का अवसर ही नहीं मिला कि सरदार जी ने मुझे दबी जुबान में बताया कि सवेरे मैं 10 पौंड डालडा का एक डिब्बा घर में दे गया था और जो सेवा हो आप कहें। सरदार जी से अनजाने ही मुझे अपने प्रश्न का जवाब मिल गया।

उनके जवाब से मैं बुरी तरह झेंप गया। एक अजीब हीनता की भावना मन में भर गई। एक नया अनुभव हुआ कि तोहफे का लेनदेन आदमी को आदमी के सामने इतना लघु बना सकता है। लघुता की भावना जब मेरे अहंकार के बल को छिन्न-भिन्न करने लगी। तब अंदर गुस्से की गर्मी तह पर तह जमा होने लगी। वह गुस्सा था सरदारजी पर जिन्होंने मुझे अपने सामने ऐसा छोटा कर दिया था। वह गुस्सा उसके ऊपर था जो तोहफ़ों की प्रणाली को मान्य कर बैठा था और वह उस समाज पर भी था जो डालडा खाता है, लेकिन समझता है कि वह असली घी के मजे ले रहा है, लेकिन मेरे सामने तो केवल ठोस सरदार जी ही थे। इसलिए गुस्से के हकदार वही बने। मैंने कहा तो आप ही वह तोहफा लाए थे।

सरदार जी को मेरा व्यंग छूने में असमर्थ रहा उल्टे प्रोत्साहित होकर बोले साहब डालडा हमेशा ताजा व शुद्ध होता है वह स्वास्थ्य पर का उतना ही अच्छा जरिया है जितना कि घी। घी का क्या भरोसा बाजार में जो भी बिकता है। उसमें कैसी मिलावट होती है। इसे तो आप जानते ही हैं। मैंने उसी व्यंग और हँसी मिश्रित स्वर में सरदार जी को जवाब दिया, खूब जानता हूं और डालडा खाकर हमने-आपने अपने शरीर में विदेशी तत्वों की कितनी मिलावट कर लिए यह भी जानता हूँ। मैंने नौकर को पुकार और डालडे का डिब्बा लाने का आदेश दिया। जब नौकर ने डालडा लाकर सामने रख दिया। तब मैंने सरदार जी से कड़े स्वर में कहा लीजिए उठाइए और यहां से चले जाइए। मेरे रुख में आकस्मिक परिवर्तन से सरदार जी पहले अप्रतिम से हो गए। फिर जल्दी ही उन्होंने अपने को संभाल लिया और बोले माफ कीजिए मुझसे कोई गलती हुई हो यदि आपकी मर्जी इसको रखने की नहीं है तो ना सही आप इसके दाम दे दीजिए। आखिर आप डालडा तो इस्तेमाल करते ही होंगे सरदार जी ने अपना बचाव करने के लिए जो ढंग अख्तियार किया, उससे मुझे मन ही मन हंसी आ गई।

नक्षण तथा मूल नक्षत्र दोष

■ श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, एडवोकेट, भोपाल

नक्षत्रों का वैदिक काल से ही महत्व है। शतब्राह्मठ में नक्षत्र शब्द का अर्थ नक्षत्र अर्थात शक्तिहीन बताया है। नि :शक्त में इसकी उत्पत्ति नक्ष अर्थात प्राप्त करना धातु से मानी गयी है। ज्योतिषशास्त्र में नक्षत्र साधारण भाषा में किसी तारा समूह को कहते है। चन्द्रमा के पथ में पड़ने वाले तारों का समूह जो सौर जगत के भीतर नहीं है। इनकी संख्या 27 है। पुराणों में इन्हें दक्ष प्रजापति की कन्या बतायी है। जो चन्द्रमा को ब्याही थी।

नक्षत्रों की संख्या तथा स्वामी :

क्र.	नक्षत्र	स्वामी
1	अश्विनी	केतु
2	भारणी	शुक्र
3	कृतिका	रवि
4	रोहणी	चन्द्र
5	मृगशिरा	मंगल
6	आद्रा	राहु
7	पुनर्वसु	वृहस्पति
8	पुष्य	शनि
9	अश्लेषा	बुध
10	मेधा	केतु
11	पूर्वा फाल्गुनी	शुक्र
12	उत्तरा फाल्गुनी	रवि
13	हस्त	चन्द्रमा
14	चित्रा	मंगल
15	स्वाति	राहु
16	विशाखा	वृहस्पति
17	अनुराधा	शनि
18	जेष्ठा	बुध
19	मूल	केतु
20	पूर्वाषाण	शुक्र
21	उत्तराषाण	रवि
22	श्रवण	चन्द्रमा
23	घनिष्ठा	मंगल
24	शतभिषक	राहु
25	पूर्वाभाद्रपद	वृहस्पति
26	उत्तराभाद्रपद	शनि
27	रेवती	बुध

चन्द्रमा 27, 28 दिनों में पृथ्वी के चारों ओर घूम आता है। खगोलषास्त्र में यह भ्रमण पथ इन तारों के बीच से होकर निकलता है। तारों के अलग अलग दल तारक पुंज नक्ष रखा गया है। सारा पथ 27 नक्षत्रों में विभक्त होकर नक्षत्र चक्र कहलाता है। प्रत्येक नक्षत्र चार चरणों में बांटा गया है। एक नक्षत्र 13 डिग्री 201 का होता है अत: एक नक्षत्र की दूरी 13/201 /4 = 30/201 होती है सवा दो नक्षत्र अर्थात 9 चरण (30/0) की एक राशि होती है। चन्द्रमा सवा दो दिन में एक राशि पार कर लेता है अर्थात सवा दो दिन तक चन्द्रमा एक ही रषि में रहता है ।27 में 12 राशियों तथा नक्षत्र पार कर लेता है।

नक्षत्र की कहानी

शिव महापुराण में बतायी गयी पौराणिक कथा के अनुसार प्रजापति दक्ष ने अपनी 27 कन्याओं का पश्चात विवाह चन्द्र देवता से किया था। कुछ समय पश्चात चन्द्रमा देवता का रोहणी की तरफ आकर्षण एवं झुकाव बढ़ गया। ये बात उनकी अन्य 26 पत्नीयों को बुरी लगने लगी चन्द्र देवता पूरा ध्यान रोहणी का रखते। जिससे शेष पत्नीयां दुखी रहने लगी। तथा प्रजापति दक्ष ने जब अपनी कन्याओं को दुखी देखा तो कारण पूछा जिसके उत्तर में सभी कन्याओं ने सारा विवरण बता दिया कि वह किस कारण दुखी है। दक्ष ने चन्द्रमा को बहुत समझाने का प्रयास किया पर वो न माने उनका व्यवहार वैसा ही रहा ।

प्रजापति दक्ष ने उनकी बात न मानने से क्रोध किया तथा क्रोधित होकर श्राप चन्द्र देवता को दिया कि तुम क्षय रोगी हो जाओ। जिसके कारण चन्द्रमा की रोशनी जाती रही। चन्द्र देवता दुखी होकर ब्रम्हा जी के पास गये ब्रम्हा जी ने शिवजी की तपस्या करने को कहा। चन्द्रमा देव ने सोमनाथ ज्योतिलिंग की स्थापना कर घोर तपस्या की तब शिवजी ने रोशनी दिये तथा कहा तुम्हारे दो पक्ष होंगे। कृष्ण पक्ष तथा शुल्क पक्ष। कृष्ण पक्ष में तुम्हारी रोशनी क्षीण होती जायेगी तथा शुल्क पक्ष में बढ़ती जायेगी। पूर्णिमा दिन तुम पूर्ण होगें तथा रोहणी नक्षत्र में वास करोगे। मास में 27 दिनों तक बारी बारी से 27 नक्षत्रों में वास करोगे, ये नक्षत्र ही अब तुम्हारी पत्नियों का रूप होगी सभी प्रसन्न रहेगी।

मूल नक्षत्र दोश

ज्योतिषशास्त्र में साधारण भाषा में किसी तारा समूह को कहते है। उग्र और तीक्ष्ण स्वभाव वाले नक्षत्रों को मूल नक्षत्र कहते है। नक्षत्र मंडल में मूल नक्षत्र का स्थान 19 वां है। मूल नक्षत्र के चार चरण होते है। चारों चरण धनु राशि में आते हैं नक्षत्र का स्वामी केतु है। वहीं राशि

का स्वामी गुरू है। 27 नक्षत्र में 6 नक्षत्र मूल नक्षत्र या गण नक्षत्र की श्रेणी में आते हैं।ज्योतिषशास्त्र ने 27 नक्षत्र नौ ग्रहों में बांटे है:-

अश्विनी (1)
मघा (10)
मूल (19)
केतु
अश्लेषा (9)
जेष्ठा (18)
रेवती (27)
बुध

कुछ ज्योतिषाचार्य इन्हें शुभ नहीं मानते। ये 6 नक्षत्र केतु तथा बुध के अधीन है। ऐसा कहा जाता है कि यदि कोई बालक इन नक्षत्रों में होता है तो उसे मूल नक्षत्र दोश में पैदा हुआ मानते है। ये 6 नक्षत्र किन राशियों में पड़ते हैं जन्म कुण्डली बना कर समझा जा सकता है।

प्रत्येक नक्षत्र के चार पद होते हैं

(1) अश्विनी - इसका पद सन्तान तथा पिता दोनों के लिए शुभ नहीं है।

(2) मघा - इसका पहला तथा तीसरा पद पिता तथा सन्तान के लिए शुभ नहीं है।

(3) अश्लेशा - इसके चारों पद अशुभ हैं।

(4) मूल - पहला दूसरा तीसरा पद अशुभ है।

(5) जेष्ठ - चारों पद अशुभ हैं।

(6) रेवती - चौथा पद बच्चे के लिए अशुभ है।

बच्चे के जन्म के समय यदि चन्द्रमा 1, 4, 5, 8, 9, 12 में गमन कर रहा है तथा जिस राशि में हो जन्म की वह मूल नक्षत्र है। चन्द्रमा कहाँ बैठा है । किस राशि में बैठा है। ये भी आधार होता है। पूर्व में भी उल्लेख कर चुकी है सभी नक्षत्रों का स्वभाव एक सा नहीं होता कुछ कोमल तथा कुछ उग्र स्वभाव के होते हैं।

प्रभाव

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाले बच्चों के स्वास्थ्य एवं स्वभाव पर भी पड़ता है कुण्डली दिखा कर इस पर ध्यान दें कि बच्चे स्वास्थ्य की समस्या कैसे हल होती है। यदि माता पिता के ग्रह ठीक हैं तो बच्चे पर ज्यादा असर नहीं पड़ता। जो बच्चे मूल नक्षत्र में जन्म लेते हैं 8 वर्ष की आयु तक ज्यादा असर होता है।8 वर्ष के बाद समस्या कम हो जाती है।

पूजन विधि

यदि लड़के का जन्म रात में मूल नक्षत्र में हुआ है तथा लड़की का जन्म दिन में हुआ है तो पूजा की आवष्यकता नहीं होती । वैसे मूल नक्षत्र शान्ति करने की पूजा 27 दिन बाद होती है क्योंकि 27 दिन में जन्म का नक्षत्र आ जाता है तभी पूजा सम्पन्न होगी।

27 कुओं या बाबड़ी के जल से बच्चे को स्नान कराते है। 27 प्रकार की लड़कियों से हवन होता है। सात प्रकार का अनाज सतनजा सात भागों में बांट कर दान करें या कबूतर को खिलायें, तुला दान करें तथा वह अनाज बाँट दें।

27 जानवरों के पैर की नीचे की मिट्टी, यदि 27 कुओं का पानी नहीं मिल रहा तो हैण्ड पम्प का साफ पानी लें तथा बच्चे के सिर पर छलनी रख कर उस पानी स्नान कराये।

8 वर्ष के बाद यदि बच्चे का स्वास्थ्य ठीक नहीं रह रहा या स्वाभाव उग्र हो रहा है तो यदि सिंह राशि है तो हनुमान की उपासना कराये, सूर्य पर जल चढ़वायें, गायत्री मंत्र का जाप आदि कराये।

यदि विदेश में है। कुछ नहीं कर सकते है तो एक कटोरी में तेल डाल कर चन्द्रमा की परछाई दिखायें तथा बाद में बच्चे की परछाई दिखाये।

बाधायें या परेशानी :-

(1) परिवार में प्रारंभ से परेशानी होती। माता, पिता भाई के स्वास्थ्य पर असर।
(2) वित्त संबंधी कठिनाई।
(3) व्यर्थ की भाग दौड़ ।
(4) दाम्पत्य सुख प्राप्त नहीं होता।
(5) मित्र या परिजन सहायता नहीं करते ।
(6) अपना जीवन स्वयं बनाते हैं।

अत: प्रयास हो कि यदि बालक मूल नक्षत्र में पैदा हुआ है तो दोष निवारण कर दें। बच्चे की माँ पूर्णमासी का व्रत करें तो दोष कम हो जाता है। मूल नक्षत्र को सतसैया तथा गण्डाक भी कहते है।

चिन्तन

किशोर और संस्कार

■ श्रीमती उषा भरत चतुर्वेदी, भोपाल

समय तेजी से परिवर्तन हो रहा है और यह परिवर्तन समाज के सभी अंगों पर पड़ रहा है। सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव से सबसे अधिक कोई प्रभावित हुआ है। वह है हमारे बच्चे जो किशोर हैं। उनके व्यवहार में परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस आपाधापी के समय में भारतीय संस्कृति और भारतीय संस्कारों का तेजी से क्षरण हो रहा है और यह क्षरण आज समाज सुधारकों और चिंतकों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। अनुशासनहीनता निरंकुशता में तब्दील हो गई है। बच्चे संस्कारवान तथा जिम्मेदार कैसे बने यह यक्ष प्रश्न सभी जाति, वर्ग एवं धर्मालाम्बियों के समक्ष है। इस यक्ष प्रश्न पर गम्भीरता के साथ चिन्तन एवं मनन करने की आवश्यकता है। मनन के प्रतिफल में सम्मुख आते है व्यस्त माता पिता और वह इस जिम्मेदारी से मुख मोड़ नही सकते। इसमें कुछ अपवाद भी हो सकते हैं।

बच्चों की पहली गुरु माँ होती है। वह प्रारम्भ में जो सीखता है, माँ से ही सीखता है। उचित–अनुचित, अच्छा–बुरा दुनिया में आने के बाद सीखता हैं। कौन अपना कौन पराया इसका ज्ञान के व्यवहार से पता चलता है। इसलिए कहा जाता हैं माँ संस्कार की संवाहिका है। माँ के द्वारा ही संस्कार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जाते हैं लेकिन अर्थ के युग में, प्रदर्शनों की होड़ में संस्कार देने का दायित्व पीछे छूट गया, बिसरा गया। आया और दाई के भरोसे बच्चा क्या सीखेगा।

दोष सारा हम बच्चे के सिर मढ़ देते हैं।

बड़े होते बच्चों को क्या हम समझ पा रहे हैं? क्या संस्कार दे पाते है? वो अपनी मन की बात हमसे कर रहे है कि नही। चाहे लड़की हो या लड़का अनुशासन हीनता हद तक जा रही है और यह घर घर की बात है। कहीं बात ढकी है। कहीं बात जगजाहिर हो रही है। क्या हम लोगों ने कभी यह विचार किया हमारे बच्चों की दुनिया सीमित क्यों हो रही है। वह कमरे के अंदर बंद क्यों रहता है। दुनिया से क्यों कट रहा है। हाथ में मोबाइल, इंटरनेट, मेल, ईमेल बस इतनी ही सीमित दुनिया है। इस गंभीर मसले पर हम ध्यान नहीं देते और पानी जब सिर के ऊपर से निकल जाता है। तब ताबड़तोड़ में समस्या का समाधान करने के लिए तत्परता से मन चाहा निर्णय लेते हैं। एक बार फिर से शान्त मन से सोचे ।बच्चों में क्षण क्षण में होते परिर्वतन उनके चेहरे के बदलते भाव पर ध्यान दिया होता तो शायद समस्या विकट न होती। शायद यही कारण है बच्चे समाज और समाज के कार्यक्रमों से दूर हो रहे है।

जरा एक बार हम सोचे जब हमारे बच्चे हमसे दूर नया घर बसाने जाएंगे, नईदुनिया बनाएंगे। जिंदगी इतनी आसान नहीं होती, क्या वह संघर्ष कर पाएगा। क्योंकि प्रारम्भ से ही हमलोग निर्णय लेते है। अपना निर्णय वह ले नही पाता।

हम अपने बच्चे प्यार से पालते हैं। स्नेह वश उसे कँही कष्ट न हो। ऐसी आशंका से भयभीत होकर उसकी हर बात में हस्तक्षेप करते हैं। ऐसा करने से हमें अपने को रोकना होगा।

किशोर अवस्था उसकी जिन्दगी का अहम पड़ाव है। इस उम्र में माता पिता नजर पैनी रखकर क्रिया कलाप देखे। गलत होने पर समझाये, डाँटे नही। इस उम्र में आक्रोश शीघ्र आता है। वह भावुकता में नहीं लेता है। वह चाहता है मेरा निर्णय सर्वोपरि हो।

ऐसी अवस्था में वह कभी–कभी गलत कदम उठा लेता है। समाज की मुख्यधारा से कटने लगता है तब माता–पिता सोचते हैं, डरा धमका कर रास्ते पर लाएंगे, पाबंदियां लगा देते हैं। इस समय स्थिर मन से माता–पिता को निर्णय लेना चाहिए। उसको समझाएं। तुम्हारी उम्र इस समय अपना भविष्य बनाने की है। उचित समय आने पर इस पर फैसला होगा। उसके आक्रोश को शाँत करें। बढ़ाएं नहीं। कभी – कभी उसका आक्रोश हमारे लिए जिंदगी भर का कष्ट दे जाता है।

हम खुले मन से, खुले विचार से, खुले दिमाग से मित्रवत व्यवहार करके फैसले लें। बच्चे के हित और कल्याण के लिए एक बार जाति, वर्ग, धर्म का विचार किए बिना बच्चे का सहयोग करें। ताकि वह आगे अपने जीवन की लड़ाई लड़ सके योद्धा के रूप में।

प्रकृति ने मानव स्वभाव की ऐसी रचना की है कि वह विपरीत लिंग की ओर खिंचता है और यह खिंचाव स्वभाविक है। ऐसे समय में उस में आए परिवर्तन तथा भावों को माँ ने समझ लिया तो तुरंत समाधान निकल सकता है। एक संवेदनशील माँ अपने बच्चे की आँखों के भावों को पढ़ लेती है। यह गुण सिर्फ हम महिलाओं को प्रकृति ने दिया है। नाजुक मसलों में निर्णय सामाजिक दबाव तथा अन्य किसी दबाव नहीं लेना चाहिए। कभी–कभी यह हस्तक्षेप परिवार के लिए हानिकारक व दुखदाई हो जाता है। परिवार की ऐसी परिस्थितियाँ तथा स्थिति लाने में एक कारण संयुक्त परिवार का विघटन भी है। एकल परिवारों की बढ़ती हुई संख्या बच्चा माँ पिता तथा स्वयं को ही परिवार का अंग मानता है। संयुक्त परिवार में यदि कुछ बंधन भी हैं तो कुछ लाभ भी हैं। बाबा, दादी, चाची, ताई, बुआ की चौकस नजरें हमेशा बच्चे पर रहती है तथा स्वभाविक रूप में वह कब अनुशासन,सहचर,सहकार, संस्कार सीख लेता है, मालूम ही नही पड़ता। भौतिकवाद की चकाचौंध ने आज सब कुछ समाप्त कर दिया। किशोर व किशोरिया नवयुवक – नवयुवतियाँ की धर्म से दूरी तथा अनआस्था भी समस्या की जड़ है। वर्तमान समय

में परिवारिक विघटन, तलाक भी हमारे बच्चों को संस्कार विहीन बना रहे हैं।

आज हमारी युवा पीढ़ी लिव इन रिलेशनशिप के जाल में भी उलझ रही है। एक समस्या का समाधान जब तक के हमारे चिंतक और समाज सुधारक निकालते हैं। दूसरी समस्या तुरंत चुनौती के रूप में हमारे सामने खड़ी हो जाती है। दुनिया में ऐसी कोई भी समस्या नहीं या ऐसा कोई भी कार्य नहीं जो असंभव हो यदि मन में कार्य करने का संकल्प और दृढ़ता हो तो कोई भी कारण नहीं कि वह समस्या का समाधान ना हो समस्या अभी इतने विकराल रूप में न फैल पाई है कि जिसे हम लोग रोक न सके। समस्या है लेकिन समस्या का समाधान भी है। हम आज अपनी व्यस्त जिंदगी में बच्चों के लिए बहुत कम समय निकाल पाते हैं। यदि पति और पत्नी दोनों ही सेवारत हो तो बच्चे पूरी तरह से झूला घर या आया के ऊपर आश्रित रहते हैं। बच्चे दरवाजे पर टकटकी लगाए अपनी माँ के आने का इंतजार करते हैं। मां घर में घुसते ही इतने तनाव में आ जाती है कि वह बच्चों को गले लगाना ही भूल जाती है। उसके दिमाग में घर का सामान समेटना, खाना बनाना आदि अनेक काम होते हैं। यदि कहीं कोई पार्टी है और वहां जाना आवश्यक है तो उसके लिए समय निकालना है। इसी में उलझ जाती है, बच्चा दौड़ कर अपनी कॉपी लाता है। मम्मी मुझे आज मेरी राइटिंग में वेरी गुड मिला है। माँ सुन रही है या नहीं यह भी समझ में नहीं आता। वह अपनी धुन में लगी है। बच्चा आशा करता है माँ मुझे शाबाशी दे। दौड़ कर अपना खेल में लिया हुआ कप दिखलाता है। माँ कहती हाँ ठीक है, ठीक है। जा जब तक और पढ़ ले। हम बाद में देख लेंगे। बच्चा मन मसोसकर किताब खोल कर बैठ जाता है। पिता थका हारा घर आता है। वह भी अपने ऑफिस की झुंझलाहट कभी-कभी पत्नी और बच्चों पर उतारता है। बच्चे माँ बाप से बात करने में कतराने लगते है और धीरे-धीरे वह एकाकी हो जाते हैं। चाहे माता हो या पिता हो बच्चों के लिए समय निकालो। उनके संग बैठो। हंसो, बात करो। वह चाहता है माँ मेरी पूरी बात सुने। माँ की अपनी मजबूरी है। लेकिन कहने का तात्पर्य है कि माता-पिता दोनों को बच्चों को समय देना चाहिए इसलिए कहा भी गया है माँ के परसे और घन के बरसे ही तृप्ति होती है। डाइनिंग टेबल पर खाना लगाकर माँ चली जाती है। बच्चे ने खाया अथवा नहीं खाया कोई चिंता नहीं। बच्चे को गोद में बैठा कर अपने हाथ से प्रेम से जब उसके मुंह में आप निवाला रखेंगे, तो जो सुख परमसुख आपको प्राप्त होगा। वह वर्णन नहीं किया जा सकता।.

जो माताएँ सेवारत नहीं है दिन भर घर पर रहती हैं। वह मोबाइल पर चैटिंग कम करें। बच्चे की तरफ नजर रखें। वह मोबाइल पर क्या देख रहा है, कौन सा खेल खेल रहा है। मोबाइल पर सब चीज उपलब्ध है और यह मोबाइल, इंटरनेट हमारे बच्चे के मस्तिष्क में कितना प्रभाव डालता है। यह हम सब अच्छी तरह से जानते हैं। यही सब कारण है कि लोग आजकल संयुक्त परिवार की तरफ फिर से रुचि दिखाने लगे हैं। बच्चे के ऊपर कभी अपने विचार न थोपे उसकी रुचि क्या है, वह क्या पढ़ना चाहता है। उसको स्वयं निर्णय लेने दीजिए। पड़ोसी के बच्चे से अपने बच्चे की तुलना कभी मत कीजिए कि पड़ोसी का बच्चा 90 परसेंट लाया है। तेरे 80 परसेंट है।

बच्चा हीन भावना से ग्रस्त होकर कभी-कभी डिप्रेशन में भी चला जाता है। खाली समय में उसे मैदानी खेल खेलने के लिए उत्साहित करना चाहिए। घर में बैठकर कार्टून देखना और समय पास करना। यह उचित नहीं है। हाँ, ये एक समस्या है कि शहरों में खेल मैदानों की कमी है। मगर कुछ खेल ऐसे हैं जो बहुत कम जगह में खेले जा सकते और मनोरंजक भी होते हैं। एक बार हम अपने देसी खेलों की तरफ नजर डालें। क्या मजा आता था चोर सिपाही खेलने में लकड़ी का लट्टू घुमाने में। अभी समय है यदि हम समय रहते हुए जागृत नहीं हुए यह भावी पीढ़ी हमारे हाथों से बिलकुल निकल जाएगी।

बाल गीत

■ डॉ0 अनुपमा चतुर्वेदी, शिकोहाबाद

बरखा रानी आओ ना। रिमझिम रिमझिम गाओ ना।
मैं विद्यालय ना जाऊंगी, छुट्टी तुम करवाओ ना।
बरखा रानी आओ ना।
मम्मी मुझको बहुत सताती।
रोज सवेरे दूध पिलाती।
ब्रेड पराठा, लंच बनाकर
आंख दिखाती, डांट लगाती।
काली वाली बदली बन कर,छत पर तुम छा जाओ ना।
बरखा रानी आओ ना।

पहले सोऊँगी जी भर कर।
फिर खेलूंगीअपने घर पर।
चॉकलेट लाऊं रानी संग,
छाता एक लगाए सर पर।
नन्ही नन्ही बूंदे बन कर, हमको तुम नहलाओ ना। बरखा रानी आओ ना।
छत पर बैठा है एक बंदर,
भाग जाएगा खुद ही अंदर।
नाव चलाऊंगी तब अपनी
बालकनी को बना समंदर।
छप्पक छैया नाच करेंगे, हमसे तुम शरमाओ ना।
बरखा रानी आओ ना। रिमझिम रिमझिम गाओ ना।

जिंदगी की जिंदादिली...

■ मदन कुमार (होलीपुरा/कोलकाता)

मुस्कुराइए

अगर आप एक अध्यापक हैं और जब आप मुस्कुराते हुए कक्षा में प्रवेश करेंगे तो देखिये सारे बच्चों के चेहरों पर मुस्कान छा जाएगी।

मुस्कुराइए

अगर आप डॉक्टर हैं और मुस्कराते हुए मरीज का इलाज करेंगे तो मरीज का आत्मविश्वास दोगुना हो जायेगा।

मुस्कुराइए

अगर आप एक ग्रहणी है तो मुस्कुराते हुए घर का हर काम किजिये फिर देखना पूरे परिवार में खुशियों का माहौल बन जायेगा।

मुस्कुराइए

अगर आप घर के मुखिया है तो मुस्कुराते हुए शाम को घर में घुसेंगे तो देखना पूरे परिवार में खुशियों का माहौल बन जायेगा।

मुस्कुराइए

अगर आप एक बिजनेसमैन हैं और आप खुश होकर कंपनी में घुसते हैं तो देखिये सारे कर्मचारियों के मन का प्रेशर कम हो जायेगा और माहौल खुशनुमा हो जायेगा।

मुस्कुराइए

अगर आप दुकानदार हैं और मुस्कुराकर अपने ग्राहक का सम्मान करेंगे तो ग्राहक खुश होकर आपकी दुकान से ही सामान लेगा।

मुस्कुराइए

कभी सड़क पर चलते हुए अनजान आदमी को देखकर मुस्कुराएं, देखिये उसके चेहरे पर भी मुस्कान आ जाएगी।

मुस्कुराइए

क्यूंकि मुस्कराहट के पैसे नहीं लगते ये तो खुशी और संपन्नता की पहचान है।

मुस्कुराइए

क्यूंकि आपकी मुस्कराहट कई चेहरों पर मुस्कान लाएगी।

मुस्कुराइए

क्यूंकि ये जीवन आपको दोबारा नहीं मिलेगा।

मुस्कुराइए

क्योंकि क्रोध में दिया गया आशीर्वाद भी बुरा लगता है और मुस्कुराकर कहे गए बुरे शब्द भी अच्छे लगते हैं।

मुस्कुराइए

क्योंकि दुनिया का हर आदमी खिले फूलों और खिले चेहरों को पसंद करता है।

मुस्कुराइए

क्योंकि आपकी हँसी किसी की खुशी का कारण बन सकती है।

मुस्कुराइए

क्योंकि परिवार में रिश्ते तभी तक कायम रह पाते हैं जब तक हम एक दूसरे को देख कर मुस्कुराते रहते है और यह सबसे बड़ी बात है।

मुस्कुराइए

क्योंकि यह मनुष्य होने की पहचान है। एक पशु कभी भी मुस्कुरा नही सकता। इसलिए स्वयं भी मुस्कुराए और औरों के चहरे पर भी मुस्कुराहट लाएं।

चल गई

■ शैल चतुर्वेदी

वैसे तो एक शरीफ इंसान हूँ,
आप ही की तरह श्रीमान हूँ,
मगर अपनी आँख से,
बहुत परेशान हूँ।

अपने आप चलती है,
लोग समझते हैं –चलाई गई है,
जान–बूझ कर चलाई गई है,
एक बार बचपन में,
शायद सन पचपन में,
क्लास में, एक लड़की बैठी थी पास में,
नाम था सुरेखा,
उसने हमें देखा,
और बाईं चल गई,
लड़की हाय–हाय कहकर,
क्लास छोड़ बाहर निकल गई,
थोड़ी देर बाद
प्रिंसिपल ने बुलाया,
लम्बा–चौड़ा
लेक्चर पिलाया,
हमने कहा कि जी भूल हो गई,
वो बोले–ऐसा भी होता है,
भूल में,
शर्म नहीं आती ऐसी गन्दी हरकतें करते हो,
स्कूल में?

और इससे पहले कि,
हकीकत बयां करते,
कि फिर चल गई,
प्रिंसिपल को खल गई,
हुआ यह परिणाम,
कट गया नाम,
बमुश्किल तमाम,
मिला एक काम,
इंटरव्यू में खड़े थे क्यू में,
एक लडकी थी सामने अड़ी,
अचानक मुड़ी,
नज़र उसकी हम पर पड़ी,
और हमारी आँख चल गई,
लड़की उछल गई,
दूसरे उम्मीदवार चौंके,
फिर क्या था,
मार मार जूते–चप्पल
फोड़ दिया बक्कल,
सिर पर पाँव रखकर भागे,
लोगबाग पीछे हम आगे।

घबराहट में,
घुस गये एक घर में,
बुरी तरह हाँफ रहे थे,
मारे डर के काँप रहे थे,
तभी पूछा उस गृहणी ने–
कौन?
हम खड़े रहे मौन
वो बोली
बताते हो या किसी को बुलाऊँ ?
और उससे पहले,
कि जबान हिलाऊँ,
आँख चल गई,
वह मारे गुस्से के, जल गई,
साक्षात् दुर्गा– सी दीखी,
बुरी तरह चीखी,
बात कि बात में जुड़ गये अड़ोसी–पडौसी,
मौसा–मौसी, भतीजे–मामा
मच गया हंगामा,
चड्डी बना दिया हमारा पजामा,
बनियान बन गया कुर्ता,
मार मार बना दिया भुरता,
हम चीखते रहे,
और पीटने वाले, हमे पीटते रहे।

भगवान जाने कब तक,
निकालते रहे रोष,
और जब हमें आया होश,
तो देखा अस्पताल में पड़े थे,
डाक्टर और नर्स घेरे खड़े थे,

हमने अपनी एक आँख खोली,
तो एक नर्स बोली,
दर्द कहाँ है?
हम कहाँ कहाँ बताते,
और उससे पहले कि कुछ,कह पाते,
आँख चल गई,
नर्स कुछ न बोली,
बाई गाड ! (चल गई) ,
मगर डाक्टर को खल गई,
बोला इतने सिरियस हो,
फिर भी ऐसी हरकत कर लेते हो,
इस हाल में शर्म नहीं आती,
मोहब्बत करते हुए,
अस्पताल में,
उन सबके जाते ही आया वार्ड बॉय,
देने लगा आपनी राय,
भाग जाएँ चुपचाप नहीं जानते आप,
बढ़ गई है बात,
डाक्टर को गड़ गई है,
केस आपका बिगाड़ देगा,
न हुआ तो मरा बताकर,
जिंदा ही गड़वा देगा.
तब अँधेरे में आँखें मूंदकर,
खिड़की के कूदकर भाग आए,
जान बची तो लाखों पाए।

एक दिन सकारे,
बापूजी हमारे,
बोले हमसे-
अब क्या कहें तुमसे?
कुछ नहीं कर सकते,
तो शादी कर लो ,
लडकी देख लो।
मैंने देख ली है,
जरा हैल्थ की कच्ची है,
बच्ची है फिर भी अच्छी है,

जैसी भी, आखिर लड़की है
बड़े घर की है, फिर बेटा
यहाँ भी तो कड़की है
हमने कहा-
जी अभी क्या जल्दी है?
वे बोले- गधे हो
ढाई मन के हो गये
मगर बाप के सीने पर लदे हो
वह घर फँस गया तो सम्भल जाओगे।

तब एक दिन भगवान से मिलके
धडकते दिल से
पहुँच गये रुड़की, देखने लड़की
शायद हमारी होने वाली सास
बैठी थी हमारे पास
बोली-
यात्रा में तकलीफ़ तो नहीं हुई
और आँख मुई चल गई
वे समझी कि मचल गई

बोली-
लड़की तो अंदर है,
मैं लड़की की माँ हूँ,
लड़की को बुलाऊँ?
और इससे पहले कि मैं जुबान हिलाऊँ,
आँख चल गई दुबारा ,
उन्हों ने किसी का नाम ले पुकारा,
झटके से खड़ी हो गईं।

हम जैसे गए थे लौट आए,
घर पहुँचे मुँह लटकाए,
पिताजी बोले-
अब क्या फ़ायदा ,
मुँह लटकाने से ,
आग लगे ऐसी जवानी में,
डूब मरो चुल्लू भर पानी में
नहीं डूब सकते तो आँखें फोड़ लो,
नहीं फोड़ सकते हमसे नाता ही तोड़ लो।

जब भी कहीं आते हो,
पिटकर ही आते हो ,
भगवान जाने कैसे चलते हो?
अब आप ही बताइए,
क्या करूँ, कहाँ जाऊँ?
कहाँ तक गुण आऊँ अपनी इस आँख के,
कमबख़्त जूते खिलवाएगी,
लाख दो लाख के,
अब आप ही संभालिये,
मेरा मतलब है कि कोई रास्ता निकालिए।

जवान हो या वृद्धा, पूरी हो या अद्धा
केवल एक लड़की जिसकी आँख चलती हो,
पता लगाइए और मिल जाये तो,
हमारे आदरणीय काका जी को बताइए।

सभापति प्रत्याशी परिचय

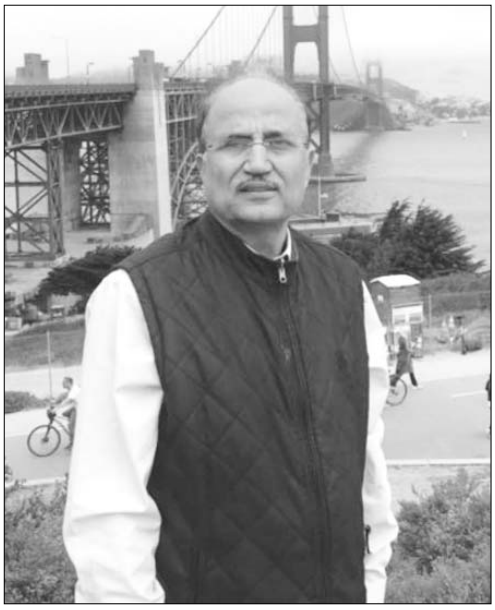

डॉ. प्रदीप कुमार चतुर्वेदी

परिचय

सुपुत्र श्री कुंदन लाल चतुर्वेदी (मंडी, बीच का मोहल्ला, होलीपुरा/मथुरा) एवं स्व. श्रीमती मनोरमा चतुर्वेदी (फरौली)

पत्नी श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी सुपुत्री स्व. श्री सत्यदेव चतुर्वेदी (अनूपशहर) एवं श्रीमती करुणा चतुर्वेदी (जहाँगीरपुर/ कोलकाता)

व्यवसाय

प्रोफेसर, अखिल अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS), नई दिल्ली

* आप 1991 से 1993 तक U.S.A. में भी रहे।

सामाजिक सेवा

* वर्ष 2004 से 2017 तक श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सचिव के रूप में निर्बाध सेवा की।
* वर्ष 2002 से 2004 तक श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संयुक्त सचिव के रूप में सेवा की।
* वर्ष 2017 से अभी तक श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के उपसभापति के रूप में निरंतर सेवा दे रहे है।
* सेवाकाल में भोपाल अधिवेशन, नेमिषारण्य अधिवेशन, दिल्ली अधिवेशन व मैनपुरी अधिवेशन के आयोजन में सक्रिय भागीदारी।
* युवा उत्सवों (जयपुर, बाह) के आयोजनों में सक्रिय योगदान।
* मंदिरों के जीर्णोद्धार में सक्रिय भूमिका।
* महासभा की समाजहित की योजना अन्नपूर्णा योजना के सुचारु व निर्बाध संचालन में सहयोग।
* वर्ष 2013 में दिल्ली अधिवेशन में पारित संशोधित संविधान संशोधन समिति (स्व. प्रभात जी की अध्यक्षता में) के सदस्य के रूप में सेवाएं।
* पुरातत्व धरोहर ग्राम होलीपुरा, तह. बाह, जिला आगरा (उ. प्र.) में होली की दौज के दिन आपके परिवार द्वारा लम्बे समय होली गायन की परंपरा का निर्वाह।
* होलीपुरा विकास समिति के अंर्तगत होली के अवसर पर कार्यक्रमों का आयोजन व व्यवस्था में भागीदारी।
* पत्रिका को स्वावलंबी बनाने के लिए योगदान
* चतुर्वेदी समाज की समृद्ध, गौरवशाली व पारंपरिक सांस्कृतिक,साहित्यिक व धार्मिक धरोहरों को सहेजने के विशेष प्रयास।
* दिल्ली सभा में लगभग 15 वर्षों तक विभिन्न पदों पर रहकर सेवाकार्यों में योगदान दिया।

उपलब्धि

समाजरत्न सम्मान, राष्ट्रीय सेवा पदक, चतुर्वेदी श्री सम्मान, आजीवन सेवा सम्मान, उत्कृष्ट सेवा सम्मान

वैदिक मिशन संस्थान द्वारा ज्वाला प्रसाद स्मृति सेवा सम्मान

ऊर्जा के स्पंदन है– एकादश रूद्र

■ कैलाष चतुर्वेदी, कासगंज

'' वन्दे महानन्दमनन्तलीलं महेश्वर सर्वविभु महान्तम।
गौरीप्रियं कार्तिकविन्धराज समुद्भवं शंकरमादिदेवम।।''

शिवपुराण में भगवान शिव के परात्पर निर्गुण स्वरूप को 'सदाशिव', सगुण स्वरूप को 'महेश्वर', विश्व का सृजन करने वाले रूवरूप को 'ब्रहमा', पालन करने वाले स्वरूप को 'विष्णु' और 'संहार' करने वाले स्वरूप को' रूद्र' कहा गया है। रूद्र का दूसरा अर्थ यह भी है कि जो सम्पूर्ण दुखों से मुक्त करा दे – 'रूजं दु:ख द्रावयतीत रूद्र:।''यह चराचर– स्थावर– जगत जो भी देखने में आता है वह सारा शिव का ही रूप है। भगवान रूद्र ही इस सृष्टि के सृजन, पालन और संहारकर्ता है। सृष्टि के आदिकारण तथा कण–कण में विद्यमान है–' एक एव रूद्रोऽवतस्थे न द्वितीय:।'' एकादश रूद्रों की कथा महाभारत, पुराणों एवं ऋग्वेदादि में वर्णित है। शैवागम में एकादश रूद्रों के नाम– शंभु, पिनाकी, गिरीश, स्थाणु, भर्ग, सदाशिव, शिव, हर षर्व, कपाली तथा भव बतलाये गये हैं। इनके मंत्र निम्न प्रकार हैं–

1. **शम्भु**– '' ब्रह्म विष्णु महेशान देव दानव राक्षस:, यस्मात् प्रजज्ञिरे देवास्तं शम्भुं प्रणमाम्यहम।'' '' ब्रह्मा, विष्णु, महेष, देव, दानव एवं राक्षस जिनसे सभी की उत्पति हुई ऐसे भगवान शम्भु को मैं प्रणाम करता हूॅ। इन की आदिभौतिक पृथ्वी मूर्ति एकाम्रनाथ (क्षितिलिंग) के नाम से शिवकाची में हैं।
2. **पिनाकी:**–'' क्षमारथ समारूढं ब्रह्मसूत्र समन्वितम, चतुर्वेदैयश्च सहितं पिनाकिनमहंभजे।''

क्षमारूपी रथ पर आरूढ, ब्रहमसूत्र से समन्वित, चारों वेदों को धारण करने वाले भगवान पिनाकी को मैं भजता हूॅ। इन की जलमूर्ति मद्रास प्रांत के त्रिचिनापल्ली में श्रीरंगम से एक मील दूर स्थित है।

3. **गिरीश:**– ' कैलास शिखर प्रोद्यन्मणिमण्डप मध्यग:, गिरीशो गिरिजाप्राण बल्लभोऽस्तु सदामदे'' कैलाश शिखर पर स्थित, पार्वती के प्राणबल्लभ भगवान गिरीश सदा हमें आनन्द प्रदान करे। इनकी अग्रिमूर्ति(तेजोलिंग) अरूणाचल में अवस्थित है।
4. **स्थाणु:**–'' वामांगकृतसंवेश गिरिकन्या सुखावहम, स्थाणुं नमामि शिरसा सर्वदेव नमस्कृतम।'' सम्पूर्ण देवों के प्रणम्य को मैं सिर से नमन करता हूॅ। इन की वायुमूर्ति बालाजी से उत्तर अर्काट जिले में स्वर्णमुखी नदी के तट पर अवस्थित है।
5. **भर्ग:**– '' चन्द्रावतंसो जटिलस्त्रिणेन्तो भस्मपांडर: हृद्रयस्थ: सदाभूयाद भर्गो भयविनाशन:'' भयनाशक भगवान भर्ग हमारे हदय में निवास करें। इनकी आकाश मूर्ति आकाशलिंग रूप में चिदम्बरम में कावेरी नदी के तट पर स्थित है।
6. **सदाशिव:**–' ब्रहमासभूत्वामृजंल्लोकं विष्णुर्भूत्वाथ पालयन, रूद्रो भूत्वाहरन्ततें गतिर्मेऽस्तु सदाशिव:।'' भगवान सदाशिव मेरी परमगति हों। सूर्य और चन्द्र इनके नेत्र हैं। इसलिये भगवान सदाशिव सूर्य सोमात्मक हैं। अत: प्रत्येक सूर्य मंदिर इनका परिचायक है।
7. **शिव:**–'' गायत्रीप्रतिपाद्याा याप्योंकार कृत सदमने, कल्याणगुण धाम्रेऽस्तु शिवाय विहिता नति:। '' गायत्री जिनका प्रतिपादन करती है, ओंकार ही जिनका भवन है ऐसे कल्याण और गुणों के धाम शिव को मेरा प्रणाम है। इन की चन्द्रमूर्ति सोमनाथ के नाम से प्रसिद्व है।
8. **हर:**– '' आशीविशाहारकृते देवौघप्रणताघये पिनाकातहस्ताय हरायास्तु नमस्कृति:।'' भुजंग–भूषण पिनाकपाणि हर को मेरा नमस्कार। इनकी यजमान मूर्ति काठमाण्डू– नेपाल में पशुपतिनाथ के नाम से प्रसिद्व है।
9. **पर्व:**– '' तिसृणां च पुरांहन्ता कृतांतमद्रभङ्गंजन: खड्गपाणि स्तीक्ष्णदंष्ट शर्वाख्योऽस्तु मुदे मम।'' त्रिपुरहन्ता पर्व हमारे लिये आनन्ददायक हों। इनका पवमान नाम से निवास आकाश में हैं।
10. **कपाली:**–'' दक्षाध्वरध्वंसकर कोपयुक्तमुखाम्बुज:,शूलपाणि: सुखायास्तु कपाली में हहीर्निशम।''शूलपाणि कपाली हमें सुख प्रदान करें। इनके आदिभौतिक स्वरूप को पावक कहा जाता है।
11. **भव:**''' योगीन्द्रनुतपादाव्जं द्वंद्वातीतं जनाश्रयम, वेदान्तकृतसचारं भवं ते शरणं भजे।'' योगीन्द्र जिनकी वंदना करते है मैं उन भव की शरण– ग्रहण करता हूॅ। ये प्रत्येक कल्प में प्रकट होकर ज्ञान और योग की स्थापना करते हैं।

भूतभावन देवाधिदेव एकादश रूद्र ऊर्जा के स्पंदन है इनके दर्शनमात्र से ऐश्रर्य की सिद्वि एवं अक्ष्य कीर्ति की प्राप्ति होती है।

'' तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नम:।।''
।।हर हर महादेव।।

माँ

■ देवेंद्र नाथ चतुर्वेदी (दिवाकर), लखनऊ

माँ शब्द का ध्यान आते ही एक सम्मान, वात्सल्य से भरपूर एक रक्षक होने का एहसास होता है। माँ एक भावना है। जिसका हृदय प्रेम, स्नेह व ममता से परिपूर्ण होता है। माँ जन्म देने के बाद से अपने जीवन पर्यन्त तक अपनी संतान की सुख व समृद्धि की ही कामना करती है। पुत्र कितना भी निरंकुश हो जाये, परन्तु माँ की ममता कम नहीं होती है।जीवन के प्रत्येक पल में अपना एहसास दिलाते हुये उन्नति के लिए प्रोत्साहित करती है। बच्चों के वैवाहिक जीवन प्रारम्भ होने के बाद भी उनके खान पान व स्वास्थ्य के प्रति सजग रहती है। माँ (स्व. श्रीमती उर्मिला देवी जी) को पारम्परिक हस्तशिल्प कलाओं का पूरा ज्ञान था। विवाह के बाद पिनाहट आने पर मोहल्ले की लड़कियों को सिलाई कड़ाई सिखाना प्रारम्भ किया। जिसका लाभ कई लोगों को प्राप्त हुआ 7 चाचा (पिताजी) स्व. श्री त्रिपुरारी लाल जी चतुर्वेदी,आगरा में नौकरी करते थे। अत: घर की तथा आपके ससुर (स्वर्गीय श्री जादोराय जी चतुर्वेदी) की पूरी देखभाल का कार्यभार आपके ऊपर ही रहा।

मायके में उम्बो सम्बोधन से जानी जाती थी। स्व. श्री रूपकिशोर जी पाठक (बटेश्वर) की एक मात्र पुत्री थी, उनकी माँ स्व. श्रीमती बसंती देवी जी – स्वर्गीय शम्भुनाथ जी (जज साहब – इंदौर)। जो बाद में महासभा के सभापति भी रहे की बड़ी बहन थी। इसी कारण जज साहब से विशेष स्नेह व आदर मिला।

बटेश्वर में चतुर्वेदी परिवार बहुत सीमित है, परन्तु वहाँ की विशेष परम्परा है कि आपसी व्यवहार सभी का परिवार जैसा है। सभी लोग सुख दु:ख में साथ देते है। आगरा आने पर उम्बो जिज्जी या बुआ का सम्बोधन ही गूँजता रहता था। सभी के यहाँ आना जाना व आत्मीयता से स्वागत करना उनका एक विशेष स्वभाव रहा। विशेष कर स्वर्गीय श्री हनुमान प्रसाद जी व स्वर्गीय श्री रविंद्र नाथ जी पाठक परिवार के साथ। किसी घर में होने वाले कार्यक्रम में पहले से ही आने का निमन्त्रण रहता था तथा उम्बो जिज्जी / बुआ भी जाकर आनंद विभोर हो जाती थी।

आगरा के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. प्रवीण जी से आपकी रिश्तेदारी तो दूर की थी परन्तु सम्बन्ध बहुत ही प्रेम का था। डॉ. प्रवीण जी भी बिना किसी हिचक एक बुलावे पर ही आ जाते थे। घर आते ही, जिज्जी का है रहो है, के सम्बोधन से वार्तालाप शुरू होता था। डॉ. साहब की स्वीकृति के बिना वह कोई भी दवा खाने को तैयार नहीं होती थी। डॉ. साहब का भी प्रेम व सम्मान सराहनीय रहा।

लखनऊ में हम लोगो का एक सामूहिक संगठन है। जिसमें विद्धान कथा वाचक डॉ. योगेश की सुमधुर वाणी में रामकथा, भागवत का आयोजन होता रहता है। कथा सुनने का आग्रह चाची (माँ) से किया। पहले शरीर शिथिल होने की बात कही परंतु कथा स्थल वृन्दावन जैसा प्रसिद्ध स्थल है, सुनकर स्वीकृति दे दी। कहा कि यहाँ भी बैठे रहते है। वहाँ भी बैठे रहेंगे।

कथा सुनने अपनी छोटी पुत्री श्रीमती वसुधा – बंगलौर तथा मेरी चचेरी बहन वीना मिश्रा की साथ आयी तथा पूरी कथा सुनी। समापन के बाद कहा कि समय बहुत ही आनंद से बीता। भगवत वचन उन्हें बहुत प्रिय थे। तीर्थटन का अवसर वह कदापि नहीं छोड़ती थी। पुन: दूसरी कथा नैमिष तीर्थ में थी। शरीर और भी शिथिल हो रहा था। अत: मना कर दिया। कथा प्राम्भ होने से दो दिन पूर्व अचानक आ गयी और कहने लगी, हुई ए वही जो राम रच रखा। देखि जाएगी व साथ चली। श्रोता कथा का आनंद कथा वाचक के सामने बैठ कर लेते है, परन्तु आपका स्थान कथा वाचक के पीछे रहता था। कहती थी दूर से कम सुनाई पड़ता है। पास से आवाज गूंजती है। नैमिष तीर्थ कथा का आनंद अपनी बड़ी पुत्री श्रीमती शोभा तथा पुत्रबधु श्रीमती शालिनी के साथ लिया।

अपने परिवार को चाचा (पिताजी) के बाद पूरी तरह संभाला। चार पांच दिन फ़ोन न आने पर शिकायत रहती थी कि क्या हुआ सब ठीक तो है। फ़ोन पर परिवार तथा सभी रिश्तेदारों का समाचार मिल जाता था। इस उम्र में भी उन्होंने स्मार्ट फ़ोन चलना सीखा तथा उसका भरपूर इस्तेमाल भी किया। आज भी मेरी नातिन (आध्या) जिसे वे बेटी रानी से सम्बोधन करती थी ।कहती है कि परेशान न करना में बड़ी दादी से शिकायत कर दूंगी। मौसम के अनुसार आपका समय अपने चारों पुत्र दिवाकर – लखनऊ , चितरंजन – जयपुर , दीपेंद्र – आगरा व धीरेन्द्र – इंदौर के साथ रहकर बीतता था। इस तरह उन्होंने हम सबको सेवा का मौका दिया। धीरे–2 समय एक वर्ष का हो गया परन्तु कभी नहीं लगा कि वह दूर है। यही एहसास रहा कि अभी फ़ोन आता होगा। माँ सम्मान ही नहीं प्यार का भी प्रतीक होता है जिसका स्थान कोई दूसरा नहीं ले सकता है।

(र.क्र.11380)

भावभीनी श्रध्द्धांजली

श्री योगेंद्र नाथ चतुर्वेदी (भइयो दा)

(होलीपुरा / कलकत्ता / दिल्ली)

गोलोकवास : 06/12/2019

"लुटा कर अपना सब पर प्यार..
तत्पर रहे जो करने सभी का उद्धार..
स्वाभिमान से पूर्ण की अपनी सारी जिम्मेदारियां अपार।
छू लिए हैं सबके दिल के तार।
मिलती नहीं ऐसी पुण्यात्मा बार-बार!!"

"आप सदैव हमारी स्मृति में रहेंगे"

श्रद्धान्वत

ज्योति – संजीव : पुत्री – दामाद
प्रीति – नितिन : पुत्री – दामाद
अंकित – वैभवी : नाती – नातिन

व सभी भाई, बहन, परिजन एवं बांधव

निवास: 78 F, R Block, Dilshad Garden, Delhi -110 095; दूरभाष –9818504542 (संजीव)

व्यंग्य

आओ कंधे से कंधा मिलाएं

■ अर्चना चतुर्वेदी

मानो जैसे कल की बात हो पूरी दुनिया पर सिर्फ मर्दों का ही साम्राज्य था, तब औरतें घर की चारदीवारी में रहती थीं। चूँकि मर्द कमाकर लाते थे और और उनके हिसाब से दिमाग भी उन्ही के पास था सो वो खुद को बड़ा तुर्रमखाँ समझते थे। फिर अचानक महिला और पुरुष की बराबरी की लहर उठी जिससे मर्द के एकछत्र राज्य वाली दीवार में दरार आने लगी। अपने कार्यक्षेत्र में यूं अचानक हुई घुंसपैंठ पुरुष बौखला गए, परेशान हो गए क्योंकि उनकी मर्दवादी सोच ये हजम नहीं कर पा रही थी कि महिलाएं उनसे कंधे से कंधा मिलाकर चलें उनसे बराबरी करें। वो महिलाओं को परेशान करने के हर हथकंडे अपनाता, कुछ मर्द तो जानबूझ कर बस में उसी सीट पर बैठते जो महिलाओं के लिए आरक्षित होती यदि महिला कहती ये मेरी सीट हैं तो वेशर्मी से कहते कहाँ लिखा है,या जहाँ लिखा है वही बैठ जा टाइप।

अरे भई मैं कोई फालतू कहानी सुना कर बोर नहीं कर रही आप इस किस्से के अंततक जायेंगे तो अपने आप समझ आएगा मैं क्या कहना चाहती हूँ।

महिलाओं में पुरुषों से बराबरी और कंधे से कंधा मिलाने का इतना जोश था कि आखिरकार पुरुषों की सोच में परिवर्तन आने लगे और मर्दवादी सोच उदारवादी सोच में बदलने लगी,अब पत्नी गाड़ी या स्कूटर चलाती तो पति आराम से बिना किसी शर्म के उसके साथ या पीछे बैठने लगा अरे भई बराबरी की बात जो है।।

बल्कि कईयों ने तो अतिउदारवादी सोच का प्रदर्शन किया और महिलाओं के सामने घुटने टेक महिलाओं को पूरा मौका दिया कि वो चाहें तो कंधे से कंधा मिलाएं या कंधे पर सवार हो जाये सारे रस्ते खुले हैं। महिलाओं ने पुरुषों की हर तरीके से बराबरी की, पुरुषों जैसा पहनावा, बालों की कटिंगयहाँ तक कि उनकी जैसी भाषा तक को नहीं छोड़ा।

अब इसे पुरुषों के दिमाग की खुराफात कहो या कोई बदले की भावना। आज उन्होंने महिलाओं की बराबरी हर क्षेत्र में करनी शुरू कर दी है और कंधे से कंधा मिलाकर चलने की बात को अति गंभीरता से लेना भी शुरू कर दिया है। पहले हॉस्पिटल में सिर्फ सिस्टर होती थी आज ब्रदर भी होते हैं। अच्छे कुक पुरुष ही होते हैं। रिशेप्शन पर आप पुरुषों को देख सकते हैं और भी बहुत सी ऐसी जगह हैं जहाँ आप पहले सिर्फ महिलाओं को देखते थे वहाँ आज पुरुष आसानी से देखे जा सकते हैं। और तो और कुछ पुरुषों ने तो मानो महिलाओं से बदला लेने की ठान ली है। जिस फैशन, स्टाइल और खूबसूरती के बल पर महिलाएं पूरी दुनिया पर राज कर रही थी, उस क्षेत्र में आज पुरुषों ने महिलाओं को भी पछाड़ दिया है। आज के पुरुष अपने लुक्स पर पूरा ध्यान देते हैं ,स्मार्ट दिखने के लिए घंटो जिम में लगाते हैं,सुन्दर दिखने के लिए ब्यूटी पार्लर में जाते हैं और वो सब यानि फेशियल,आई ब्रो और वो सारे कार्यक्रम करते हैं जिन्हें करके महिलाएं सुन्दर दिखती हैं। कुछ तो नाक कान में वालियां पहनते हैं, लड़कियों की तरह हेयर स्टाइल रखते हैं, तरह तरह की ज्वेलरी और एक्सेसरीज इस्तेमाल करते हैं। आज के लड़कों का फैशन और स्टाइल किसी का भी दिमाग चकराने के लिए काफी है कि ये लड़का है या लड़की। फ़िल्मों और टीवी में तो मर्द औरतों के पहनावे तक को अपना रहे हैं बल्कि कुछ हीरो तो हिरोइन के चरित्र में ही ज्यादा नाम कमा रहे हैं, गुत्थी, पलक, दादी की तरह। यानि हिरोइन का पत्ता साफ़।

और एक बात आज के युग में आप महिलाओं को कतई दोष नहीं दे सकते कि वो अपनी उम्र छिपाती हैं या आंटी कहने पर नाराज होती हैं। आज के पुरुष जवान और सुन्दर दिखने के लिए वो सारे हथकंडे अपनाते हैं जिनके लिए सिर्फ महिलाएं विख्यात क्या कुख्यात मानी जाती थी। अपने बाल रंगेंगे,खाने पीने का धयान रखेंगे,बोटोक्स लगवाएंगे, हेयर ट्रांसप्लांट करवाएंगे, अपनी उम्र छिपायंगे और तो और कुछ को तो आप अंकल कह दो तो चिड जायेंगे आज वो मिस्टर शर्मा टाइप संबोधन सुनना पसंद करते हैं। वो दिन दूर नहीं जब पुरुष भी महिलाओं वाले नाम रखने लगेंगे। उदाहरण के लिए अब आपको मिस्टर सीता, सावित्री, कामिनी मिलेंगे। वो दिन दूर नहीं जब पुरुषों के बैग से लिपिस्टिक या दूसरी चीजें बरामद होंगी। बस एक ही काम है जो मर्द नहीं कर सकते। क्या करें, प्रकृति ने उन्हें इस मामले में लाचार कर दिया है। वे मां नहीं बन सकते। लेकिन कुछ जिद्दी पुरुष महिलाओं को मात देने के लिए प्रेग्नेंट होने का नाटक तो कर ही सकते हैं। पता चला कि कई पुरुष पेट में कुछ बांधे हुए चले आ रहे हैं। मेट्रो में ऐसे लोग धीमे कदमों से चलते हुए आएंगे और %प्रेगनेंसी% के नाम पर सीट भी क्लेम कर लेंगे।

इंट्रो : वो दिन दूर नहीं जब पुरुष भी महिलाओं वाले नाम रखने लगेंगे। उदाहरण के लिए अब आपको मिस्टर सीता, सावित्री, कामिनी मिलेंगे।

संस्मरण

भिंड जनपद हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा भिंड नगरपालिका द्वारा निराला की स्मृति में आयोजित समारोह

■ प्रस्तुति : प्रकाश चंद्र चतुर्वेदी, बादशाह, फिरोजाबाद

हम माथुर चतुर्वेदियों का विनोदी स्वभाव और साहित्यिकता का गुण प्रकृति प्रदत्त है। भैयासाहब श्रीनारायण जी की विनोदप्रियता तो सम्पूर्ण हिन्दी संसार मे विख्यात थी। वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आमंत्रण पर भिण्ड पधारे थे। उन्होंने वहाँ कवि निराला की प्रतिमा का अनावरण भी किया था। वह इससे पूर्व तरसोखर होकर आये थे।तरसोखर चौबे लोगों का प्रसिद्ध गांव है। लगभग सभी की वहाँ रिश्तेदारियां हैं। भैयासाहब ने अपनी कवित्व शक्ति से जो रोचकता से यात्रा वृतांत लिखा वह सचमुच पढ़ने लायक है ।उसके कुछ अंश दृष्टव्य हैं

जैसो कठिन भजन है हरिकौ
बैसोई कठिन जैनियों साँची मारग तरसोखर को
अब जब तरसोखर हवै आये कौन त्रास मोकौ जमपुर को
वा मग परत एक वैतरिणी, इन्है नाँघिवौ तीन नदिन को
जमदूतन से टौर खड़े है, भरकन मिलत दंड दचकन कौ
छंकुर औ करील के कांटे, चलनी करि डारत अंगन कौ
एक पहिया पाताल सिंधारियों, दूजौ चाहत नभ नापन कौ,
नभ,पाताल नापि इक संगहि, इक्का बन्यौ रूप बामन कौ
जेठ मास दुखदाई बैसिहि तापै दाप ताप आतप कौ
सन सन करत लपट तन भूँजै, जैसे अग्नि नरक शैशव कौ
जा ऋतु करि जबरई बुलाबै कौन उपाधि दी हुं मैं उनको,

किंतु मार्ग कितना कठिन और दुखदाई रहा हो। आपकी इस सुंदर भूमि यहाँ के लोगों और संस्कृति में मेरा मन मोह लिया। इसलिए मैंने आगे लिखा–

एक भेद लखि हरषि उठयों हिय,
पहुँच न रहै त्रास मारग कौ
यह छविधाम ललाम ग्राम लखि
भ्रम यह होत धाम श्री हरि कौ।
लता–पता मंडित टीले लखि
पुण्य होत गिरिराज दरस कौ
लखि करील के कुंज मनोहर
भान होत श्री बृन्दावन कौ।
नाचत मोर, मोरनी कुहकत
कलरव होत विविध विहंगम कौ।
सुरभी सी गैयन, बघरनि लखि।
उपजत मन अतिरेक हृदय कौ।
ब्रज कविता सी नवल छोहरी
बोलत मधुरी ब्रजवानी कौ।
इनहि देखि, भासत अब हवैहै
कतनहु दरष राधा रानी कौ।
मीठे नेह सने बैनन सुनि,
जात पथिकजन कौ मन मुरक्यों।
जैसो फल हरि भजन होत है
तैसोई खेरौ तरसोखर कौ।

आज यह मार्ग कठिन नहीं है। इस बार मोटर में इटावा स्टेशन से भिंड 40 मिनट में बड़े आराम से पहुँच गए। अब यात्रा आराम दायक व सुगम हो चली है। भिंड और इटावा एक नगर के दो मोहल्ले हो गए हैं।

दादी मां के नुस्खे

भोजन करें धरती पर, अल्थी पल्थी मार।
चबा चबा कर खाइए, वैद्य ना झाँके द्वार ।।
प्रात: काल फल रस लो, दोपहर लस्सी छाछ।
सदा रात में दूध पी, सभी रोग का नाश।।
प्रात: दोपहर लीजिए, जब नियमित आहार।
तीस मिनट की नींद लो, रोग ना आवे द्वार।।
भोजन करके रात में, घूमे कदम हजार।
डॉक्टर, ओझा, वैद्य का लूट जाए व्यापार।।
घूट घूट पानी पियो, रह तनाव से दूर।
एसिडिटी या मोटापा होवे चकनाचूर।।
अर्थराइज़ या हार्निया, अपेंडिक्स का त्रास।
पानी पीजै बैठकर, कभी ना आवे पास।
रक्तचाप बढ़ने लगे तब मत सोचो भाय।
सौगंध राम की खाइ के, तुरत छोड़ दो चाय।।
सुबह खाइए कुंवर सा, दुपहर यथा नरेश।
भोजन लीजै रात में, जैसे रंग सुरेश।।
देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल।
अपच, आँख के रोग सँग तन भी रहे निढाल।।

शाखा समाचार

गाजियाबाद : श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा, गाजियाबाद का होली मिलन समारोह 01.03.2020 को साहिबाबाद पर प्रात:10 बजे से धूमधाम से आयोजित किया गया। सभा के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र जी ने सभी बांधवों का स्वागत किया। होली मिलन समारोह में लगभग 400 पुरुष, महिलाओं एवं बच्चों ने भाग लिया। समारोह का आरम्भ श्री प्रधुम्न जी ने होली गायन से शुरुआत की। इसके उपरान्त सर्वश्री लोकेंद्र जी, विवेक जी, रत्नेश जी, नूतन जी, विकास जी, प्रदीप जी 'संजू', गोपाल जी, धर्मेश जी, मुदित जी एवं कविता जी, रेनू जी, अनुपम जी, सुजाता जी एवं समस्त महिलाओं ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री भूषण जी ने अपने शादी की 25वी वर्षगांठ पर गाजियाबाद सभा को 11000/- रुपये भेंट दिये। श्री भूषण जी एवं गुंजन जी का धर्मेन्द्र जी एवं अंजलि जी ने अभिनन्दन किया। अध्यक्ष धर्मेन्द्रजी ने होली मिलन में पधारे सभी बांधवों को धन्यवाद दिया।

-**राकेश चतुर्वेदी,** सचिव

समाज समाचार

* चि. मनी सुपौत्र स्व. श्री जयनारायण चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती सरस्वती देवी चतुर्वेदी सुपुत्र श्री अजीत चतुर्वेदी एवं श्रीमती वन्दना चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) का शुभ विवाह सौ.अंकिता सुपुत्री स्व.श्री राकेश चतुर्वेदी एवं श्रीमती सुमति चतुर्वेदी (ग्वालियर) के साथ दिनाँक 18 जनवरी 2020 को आगरा में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 2100/- प्रदान किये। बधाई।

(र. क्र. 11401)

---

* चि. मयंक रावत सुपुत्र श्रीमती सीमा एवं गोपेश रावत (अनूप शहर/ कोटा) का शुभ विवाह सौ. मणिका सुपुत्री श्रीमती उषा चतुर्वेदी एवं स्व. श्री ऋषिकांत चतुर्वेदी (कछपुरा/ ग्वालियर) के साथ दिनाँक 31 जनवरी 2020 को कोटा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने महासभा सहायतार्थ 501 रुपये प्रदान किए। बधाई।

(र.क्र. 11685)

---

* चि. रचित सुपौत्र स्व. श्रीमती दमयंती एवं स्व. श्री बालस्वरूप चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती सुनंदा एवं श्री कमलेश चंद्र चतुर्वेदी (मथुरा /झांसी) का शुभ विवाह सौ. रम्या सुपुत्री श्रीमती ज्योति एवं श्री रंजन चतुर्वेदी (मथुरा/आगरा) के साथ दिनाँक 26 फरवरी 2020 को आगरा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने रुपये 1100/- महासभा सहायतार्थ व रुपये 1100/- पत्रिका सहायतार्थ प्रदान किये। बधाई।

(र.क्र.11397)

---

16 मार्च 2020 चैतीआठें के दिन चन्द्रपुर गाँव में कैमरे बाबा के मेले के अवसर पर, बृद्ध जन सम्मान समारोह में सर्वश्री नानक चंदजी, मेवाराम जी, माधुरी मोहन जी, मिथलेश जी, कामता प्रसाद जी, रवीन्द्रनाथ जी,भोगेश्वरजी, श्रीमती रजनी देवी, श्रीमती शारदा देवी, श्रीमती कामता प्रसाद जी का शाल, श्रीफल और सम्मान पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सत्येन्द्र पाठक ने ग्राम विकास के लिए सभी बान्धवों से अपील की।

दिवंगत स्वजन

* श्री उपेंद्र नाथ चतुर्वेदी,छून्नौ (मैनपुरी/रिषडा) का स्वर्गवास दिनाँक 24 मार्च 2020 को हो रिषडा में हो गया।

* श्री राजीव चतुर्वेदी (विल्सन) पुत्र स्वर्गीय श्री प्रकाश चंद चतुर्वेदी (हिंडौन/ जयपुर) का स्वर्गवास दिनांक 23/03/2020 को जयपुर में हो गया।

* श्री कमलकांत चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. खरगजीत चतुर्वेदी (होलीपुरा/ ललितपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 24/03/2020 को ललितपुर में हो गया।

शाखा समाचार

भोपाल

होली एवं रंगपंचमी के उपलक्ष्य में श्री माथुर चतुर्वेदी सभा शाखा भोपाल द्वारा होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 15.03.2020 को किया गया। होली मिलन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाज के बंधु शामिल हुए। लगभग 250 परिवारों के निवासित समूह के द्वारा जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद थीं, ने होली मिलन गीत,भजन, नृत्य ढोल, मंजीरों की थाप पर प्रस्तुत किए। पुरूष एवं महिला ओं के सामूहिक होली गायन से समय का पता ही नही चला। बीच-बीच में ठंडाई और गरमा गरम भजियों का दौर जारी रहा। सांस्कृतिक सचिव श्रीमती पद्मरेखा के साथ श्रीमती ऊषा, श्रीमती शिवांगी, श्रीमती सीमा(अयोध्या बाय पास) ,सुनिताजी, सरिता जी,सुमनजी, निशी जी, मालाजी, गार्गी जी,गरिमा जी,सीमाजी, चित्रा जी,नीरजजी ने गायन का भार सम्हाला। पुरुषों में होली गायन सभा संरक्षक भरत जी, राजेशजी,अशोक जी, रामचंद्र जी (डबली),भरत जी (चंद्रपुर), अम्बरजी, ललितजी द्वारा किया गया। कार्यक्रम स्थल की साजसज्जा अध्यक्ष सुरेन्द्रजी, ललितजी व ऊषा जी,मनीषा जी द्वारा की गई। सुरेन्द्र जी के निर्देशन में मा. सार्थक, मा. राघव, सुश्री उर्वी द्वारा अतिथियों व गायकों पर पुष्प वर्षा की गई। सुरेन्द्रजी(अध्यक्ष),बीनू जी(सचिव), मनीषा जी, ललित जी(कोषाध्यक्ष) सभी आगंन्तुकों को चंदन के टीके?, राधे राधे आकृति के लगा रहे थे। जो आकर्षक लग रहे थे। पूर्व अध्यक्ष सर्वश्री ब्रजेश जी, राजेश जी, शशांक जी के साथ सर्वश्री अनिल जी (जज साहब), सुमंत जी, ललित जी, अंबर जी, रमाकांत जी,सुभाषजी,दिलीप जी, हरीश जी इस अवसर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम में अध्यक्ष सुरेन्द्र जी ने दीपक जी (द्वारका पुरी, गोपालजी (पुरा) को कार्यकारिणी में लेने की घोषणा की। कार्यक्रम का समापन अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी के आभार प्रदर्शन एवं सुस्वादु सहभोज के साथ उमंग, उल्लास से अतिरेक सद्भावना पूर्ण माहौल में हुआ।

-सुरेन्द्र चतुर्वेदी, अध्यक्ष

***

मथुरा

दिनाँक 15 मार्च 2020 को गोविंद नगर स्थित सोनी धर्मशाला में श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा मथुरा का होली मिलन समारोह सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन से प्रारंभ हुआ।

परंपरागत फाग गायन में लोक संस्कृति की झलक नजर आई तो मस्ती में चतुर्वेदी पन की। सभी बांधव का चंदन लगाकर स्वागत किया गया। महिलाओं ने प्रचलित होली के गीतों का समवेत स्वरों में गायन

किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष शैलेंद्र नाथ चतुर्वेदी, किशन चतुर्वेदी, डा.राकेश चतुर्वेदी, आलोक चतुर्वेदी, संजय चतुर्वेदी,पंकज चतुर्वेदी, मुरलीधर चतुर्वेदी, रेनू चतुर्वेदी, मुक्ता चतुर्वेदी, रश्मि चतुर्वेदी, कुमुद चतुर्वेदी, साधना चतुर्वेदी, रुचि चतुर्वेदी ने बढ़चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम प्रसाद वितरण के साथ हुआ।

***

ग्वालियर

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा ग्वालियर के तत्वाधान में 14 मार्च

2020 को होली मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें मुख्य गायक टिकेंद्र नाथ जी, सुधीर जी और फरीदाबाद से पधारे अशोक जी ने ढोलक पर उमेश(कल्लू) और आकाश जी ने संगत दी।और रंग सरस के पांच रचयिता में से एक श्री त्रिलोकीनाथ (चंदवार) होलिया सुनकर सभी का उत्साहवर्धन कर रहे थे। होली गायन के बीच हमारे ही अनुभव चतुर्वेदी,तरसोखर ने छोटी सी उम्र में ढोलक बजाकर अपनी छाप छोड़ी। गायन पश्चात ठंडाई एवं स्वरुचि भोज का आनंद सभी ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर लिया। हमारे संरक्षक श्री बैकुंठ नाथ जी के स्थान कर्नल साहब की डयोढ़ी पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्य रूप से मनोज जी, आनंद जी, अजय जी, करुणेश जी, प्रमेंद्र जी, कुलदीप जी, सुरेंद्र जी, मुकेश जी, विकास जी, सौरभ जी, डॉ मुकेश जी, निखिल जी, अनिल चौबे जी, नानक चंद जी, राजेश जी आदि ने मुख्य रूप से उपस्थित थे। सचिव अभिषेक जी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

-अभिषेक चतुर्वेदी, सचिव

***

होली होलीपुरा की

होली का त्यौहार आते ही हम होलीपुरा वासी गांव पहुंचने का कार्यक्रम बनाने लगते हैं ,क्योकि विगत् 21वर्षो से लगातार गांव में प्रवासी बान्धवों का सम्मेलन जो होता है।यदि सच कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जो आनन्द होलीपुरा की होली में है वह

अन्यत्र नहीं ।इस बार भाई विपिन जी को मातृशोक , स्व हुकुम चन्द्र जी एवं स्व प्रताप नारायण जी जैसे ग्राम स्तम्भों के विछोह से असमंज जैसी स्थिति बनी हुई थी ,परिणामस्वरूप कुछ लोग नहीं पहुंच सके। यही जीवन चक्र है जिसमें दु:ख – सुख के साथ जीवन का चक्र अपनी गति

से चलता रहता है ।8 मार्च 20 को पहुंचने वाले बान्धव गांव पहुंच गये और जगह जगह भाई प्रदीप जी का महासभा के सभाभति का निर्विरोध निर्वाचन होने पर उनके होलीपुरा आगमन के स्वागतार्थ बैनर देखकर प्रसन्नता भी हुई ।रात्रि में सर्वप्रथम आनन्द सिंह परिवार की ओर से सर्वश्री धीरेन्द्र नाथ जी, राकेश चन्द्र जी ,अशोक कुमार जी ,भरत कुमार जी , नरेन्द्रनाथ जी एवं करुणेश कुमार जी द्वारा डा. प्रदीप जी को पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया तथा होली की बैठक का आयोजन किया गया ।दूसरे दिन सुबह आगरा से पधारे श्री सतीश जी शर्मा आचार्य द्वारा सत्यनारायण कथा सुनाई एवं नव निर्वाचित सभापति डा. प्रदीप जी को स्वाफा बांधकर सम्मानित किया।

सायं पुरा बैठक का आमन्त्रण आ चुका था अत: सभी बान्धव चार बजे पुरा पहुंच गये जहां लगभग विगत डेढ़ दशक से पुरा, होलीपुरा एवं तालगांव के बान्धवों का सम्मेलन होता है। होली गायन की बैठक के मध्य नवनिर्वाचित महासभा सभापति डा. प्रदीप जी का मव्य स्वागत किया गया ।पुरा से आकर होलिकादहन में सभी सम्मिलित हुए ।मौसम के कारण गुलाल से होली खेली गई तथा यथावत चौपई की बैठकों के साथ कानपुर से विशेष रूप से पधारे पंकज जी के यहां गद्दी पर होली गायन की बैठक उल्लेखनीय रही। रात्रि में मुकेश जी आगरा के निवास पर होली गायन की बैठक हुई। दूसरे दिन ऐतिहासिक रुप से लगभग डेढ़ दशक से अधिक समय से अनवरत जारी डा. प्रदीप जी के निवास पर होली गायन की दौज की बैठक हुई तत्पशचात हलधर दरवाजे पर होली गायन की बैठक के आयोजनों में पुरा ,तालगांव के बान्धव भी सम्मिलित हुए ।इस दौरान महेश जी दिल्ली, लालन जी आगरा एवं राकेश जी मथुरा की गरिमामय उपस्तिथि रही ।होली गायन की इन बैठकों के गायन में में सर्वश्री राकेश जी, नीरज जी, संजय जी, अशोक जी, करूणेश जी, संज्जू जी बाबा,संजय जी लखनऊ, विपिन जी ,अशोक जी पाण्डे होलीपुरा,मनीष जी दिल्ली,नलिन जी नोएडा व हेमन्त जी , मुकेश जी पुरा एवं गोकर्ण जी , प्रवेश जी तालगांव आदि तथा वादन में भारत सुपुत्र श्री अमित जी अभिनव सुपुत्र विपिन जी ,गोविन्द सुपुत्र स्व सौरभ जी ,एवं गिरिराज जी होलीपुरा के नाम उल्लेखनीय हैं। तीज के दिन तालगांव में होली की बैठक का आयोजन हुआ जिसमें पुरा ,होलीपुरा के बान्धव सम्मिलित हुए। चन्द्रपुर से पधारे श्री अजय राज जी ने अपने निराले अन्दाज में होलियां सुनाकर मन्त्रमुग्ध कर दिया।

होलीपुरा की होली मिलन समिति द्वारा जिस प्रकार श्री धीरेन्द्रनाथ जी के नेतृत्व में सर्वश्री नवीन जी, करूणेश जी, डा.प्रदीपजी, विपिन पाण्डे जी, आनन्द जी ,डा. मनोज जी, अशोक पाण्डे जी, चन्द्रकान्त जी ,विमल जी एवं लेखक के असीमित योगदान द्वारा अनवरत दो दशक तक कार्यक्रम को जारी रखा है उसे वह एक उपल्ब्धि मानती है। क्योकि होली गायन की भावी पीढी तक जड़े मजबूत कराने में वह सफल रही है जिनमें भारत, अभिनव एवं गोविन्द जैसे बाल कलाकारों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।इसी उद्देश्य से समिति के सदस्यों ने यह निर्णय लिया है कि आगामी वर्ष से दो –दो गायक – वादक कलाकारों को सम्मानित किया जायेगा ।साथ ही आयु के नौवें दशक की दहलीज पर पहुंचकर सुदूर कलकत्ता से श्री राजेन्द्रनाथ जी का होलीपुरा पहुंचना तथा बैठकों में सम्मिलित होकर गायन में भाग लेना हम सभी के लिए प्रेरणास्पद है आपके इस जज्बे की जितनी प्रशंसा की जाय कम है ।इन सभी कार्यक्रमों में महिलाओं ने भी बढ़ – चढ़ कर हिस्सा लिया जो एक बड़ी उपलब्धि है। इसे देखते हुए होली मिलन समिति ने यह निर्णय लिया है कि आगामी वर्ष से महिलाओं के होली गायन की बैठक का भी आयोजन किया जाये।

– **भरत चतुर्वेदी** अचल होलीपुरा/रिषड़ा

इटावा

इटावा में श्री प्रांशु चतुर्वेदी के संयोजकत्व में होलीमिलन समारोह उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ ।इस अवसर पर समाज की महिलाओं,पुरुष,बच्चों सभी ने एक दूसरे को होली की बधाई दी। श्रीमती संध्या, रूबी, भानु, मधु, मनीषा, पायल, रचना, राखी आदि के अलावा विनय गुल्लन,शिखर,ईशान आदि ने सुमधुर होलियों से शमां बांध दिया ।इस अवसर पर समाज के वयोवृद्ध अर्जुन चतुर्वेदी, राकेश जी कुक्कू,अशोक नारायण जी,प्रवीण कुमार जी,उपेंद्र जी,शशांक जी,पुनीत जी,कपिल जी,मुकेश जी,अम्बरीष नारायण जी,हिमांशु जी,राजेश जी,गिरीश जी,आलोक जी,पीयूष जी, शिवम,अखिल जी आदि उपस्थित रहे ।आगुन्तकों का स्वागत संजय जी, प्रांशु, कपिल, अन्नू,विभु आदि ने किया।

समाज समाचार

सुबोध चतुर्वेदी की दो पुस्तकें धूप-छाँव ,कथा संकलन और उपन्यासलतिका का लोकार्पण मुख्य अतिथि सुश्री जया जादवानी के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीधर पराड़कर द्वारा की गई। उक्त कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता श्री सुरेश सम्राट और श्रीमती राजरानी शर्मा थी। शहर के गणमान्य लोगों की उपस्थिति एवं स्वज्नों के सहयोग से कार्यक्रम का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

***

दिनांक 30 जनवरी 2020,गुरूवार, बसंत पंचमी को चिं.सर्वेश चतुर्वेदी सुपुत्र शैलेष कुमार चतुर्वेदी, सुपौत्र स्व.श्री द्वारिकाप्रसाद जी चतुर्वेदी (हाथरस) जयपुर का शुभ-विवाह सौं.कां.पूजा चतुर्वेदी सुपुत्री रविन्द्र कुमार चतुर्वेदी ,सुपौत्री स्व.श्री रामस्वरूप जी चतुर्वेदी(गंगापुरसिटी) जयपुर के साथ जयपुर में सम्पन्न हुआ।

दिनांक 26 जनवरी 2020,रविवार को चिं.विश्वेश चतुर्वेदी सुपुत्र शैलेष कुमार चतुर्वेदी, सुपौत्र स्व.श्री द्वारिकाप्रसाद जी चतुर्वेदी (हाथरस) जयपुर का शुभ-विवाह सौं.कां.तन्वी चतुर्वेदी सुपुत्री ब्रजेश चतुर्वेदी ,सुपौत्री स्व.श्री चक्खन लाल जी चतुर्वेदी(चन्द्रपुर) भरतपुर के साथ भरतपुर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायता 5100 रुपए प्रदान किये। र.क्र.11389

***

चि. विकास चतुर्वेदी पुत्र डॉ. वीरेन्द्र एवं श्रीमती स्नेह लता (मैनपुरी/लखनऊ) के जी.एम. श्रीसीमेंट के पद पर प्रोन्नति के उपलक्ष्य में चतुर्वेदी चन्द्रिका हेतु 1100/रु. प्रदान किये। र.क्र.11390

***

श्रीमती प्रतिभा-अनिल चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.कस्तूरी देवी- स्व. रविन्द्र नाथ जी पूर्व संपादक चतुर्वेदी पत्रिका इटावा/पूना ने अपने पुत्र चिरंजीव अंकित के विवाहोपलक्ष में 551 रुपये महासभा तथा 551 रुपये पत्रिका को सहायतार्थ प्रदान किये। बधाई। र.क्र.11391

***

श्री वेदमंगल परिवार (मैनपुरी/ आगरा) के अक्षत चतुर्वेदी द्वारा अपने पिता स्व. श्री भुवनेश चन्द्र चतुर्वेदी की पुण्य स्मृति में अन्नपूर्णा योजना हेतु ? 12000/- प्रदान किये।

र.क्र.11379

***

चि. मुदित चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती सुधा - स्व. प्रभात कुमार चतुर्वेदी, पूर्व उप सभापति, महासभा (इटावा/बरेली) को हरियाणा स्कूल ऑफ बिजनेस, गुरू जम्बेशवर यूनिवर्सिटी, हिसार से बिजनेस मैनेजमेंट में पीएचडी होने की हार्दिक बधाई। इस अवसर पर माता श्रीमती सुधा चतुर्वेदी ने चंद्रिका सहायतार्थ रुपए 501 प्रदान किए एवं उनके सास-ससुर श्रीमती रेखा चतुर्वेदी एवं श्री प्रवीन चतुर्वेदी (बिजकौली/दिल्ली) ने चंद्रिका सहायतार्थ 501 प्रदान किये। बधाई।

र.क्र.11387

***

सौ. मान्या सुपुत्री श्रीमती भानू एवं श्री विनय मिश्र मैनपुरी /इटावा का शुभ विवाह चि. अंकित सुपुत्र श्रीमती रचना श्री यतीन्द्र चतुर्वेदी इटावा/कोटा के साथ 15 फरवरी को कोटा में सम्पन्न हुआ। कन्या पक्ष ने 251 रुपये महाविद्या एवं 251 रुपये महासभा को प्रदान किये। बधाई र.क्र.11391

***

मैनपुरी निवासी इटावा प्रवासी स्वर्गीय चंद्रशेखर जी की पौत्री शिवांगी ने चार्टेड एकाउंटेंट परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसके साथ ही इसके छोटे भाई चिरंजीव इशांग मिश्र ने सी ए फाउंडेशन परीक्षा पास की है।इनके माता पिता श्रीमती भानू एवं श्री विनय मिश्र गुल्लन ने 251 रुपये महासभा तथा 251 रुपये पत्रिका को प्रदान किये। बधाई। र.क्र.11391

***

श्रीमती सरिता चौबे- श्री भुवनेश कुमार चौबे (पुरा/ गोंदिया) के विवाह की 25 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 11000 रुपये प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.11696)

***

चि. अमोद पुत्र श्री हेतेन्द्र नाथ पान्डे पौत्र स्व. त्रिवेणी सहाय पान्डे (तालगॉव) का शुभ विवाह सौ. हर्षांगिनी पुत्री श्री श्रीप्रकाश चतुर्वेदी सुपौत्री स्व. श्रीनाथ चतुर्वेदी (जयपुर) के साथ 31जनवरी 2020 को जयपुर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने 501/-रूपये महासभा को एवं 501/-रुपये चतुर्वेदी पत्रिका को प्रदान किये। र.क्र.11393

***

दिनांक 8 मार्च, आगरा में जीवन साथी के तत्वाधान में होली गायन का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में तीरथ जी (फरौली), संजय (होलीपुरा), गोकर्ण जी (तालगांव),अलोक जी (फरौली) आदि ने अपने गायन से प्रेम और सौहार्द्र के प्रतीक होली के सतरंगी महापर्व में अपने इष्ट की भक्ति का पावन रंग संगीत के रूप में मिश्रित किया और उस अमृत तुल्य मिश्रण की फुहार सभी श्रोताओं पर बरसायी। इस कार्यक्रम में पूर्व सभापति रज्जन जी (होलीपुरा) के साथ उमेश जी, जीतेन्द्र जी, मुकेश जी, भूपेंद्र जी, संजीव जी, प्रफुल्ल जी, चंद्रकांत जी, प्रदीप जी (लालन), अनुपम जी, हेमेंद्र जी आदि भी उपस्थित थे।

व्यवस्था में मधुकर जी, आशुतोष जी, चंचलजी का उल्लेखनीय योगदान रहा। अंत में सभी ने स्वादिष्ट ठंडाई एवं स्वल्पाहार का आनंद उठाया। बाद में चतुर्वेदी जीवनसाथी ने सभी आगंतुकों का आभार प्रकट किया।

***

राकेश कुमार चतुर्वेदी(चुन चुन) पुत्र श्री विमल चंद चतुर्वेदी (फरौली/बरेली) एवं श्रीमती भारती चतुर्वेदी पुत्री श्रीमती कुसुम चौबे(लखनऊ) ने विवाह की 25 वीं वर्षगांठ 13 नवंबर 2019 के अवसर पर चतुर्वेदी चंद्रिका सहायतार्थ 2100 रुपये प्रदान किए। र.क्र.11386

***

अपार प्यार – होलीपुरा हर बार

नलिन चतुर्वेदी (होलीपुरा,नोएडा)

मन नही माना और चल दिये दूज पर होलीपुरा 11 तारीख की सुबह नोएडा से निकले सीधे गाँव की ओर तथा सीधे पहुँचे बटेश्वर। स्वच्छ निर्मल कलिंदी के तीर, गौरा महादेव के 108 मन्दिर के दर्शन को कैमरा में कैद किया। ऐसा लगा मानो कि वहीं पर ही यात्रा का उददेश्य पूरा हो गया। आगे बढे और फ़रेरा के नाके को पार कर होलिपुरा के लिए घूमे। सुन्दर मनोरम दृश्य , सडक के दोनों तरफ पीले सरसों के खेत,आम में बौर और एक भीनी भीनी खुशबू मन्द शीतल वयार से होलिपुरा में स्वागत हुआ। पीलू राग याद आ गयी आयो बसंत कहौ उन हरि सौ, बौरे अम्ब बन फूली सरसों विशाल भव्य कॉलेज देखकर फिर गाड़ी रोकी और दामोदर इंटर कॉलेज की फ़ोटो ली। वहाँ से ही सीधे पहुँचे इन्द्रजीत भवन। भाई अरुण का स्नेह स्वागत और आदर सत्कार स्वीकार किया। उसी मोहल्ले में पुरानी हवेलियाँ देखी, जो विदेशी पर्यटक के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र हैं तथा शासन द्वारा मानित होलीपुरा गाँव के हेरीटेज ग्राम के नाम के साथ।

रास्ते में डॉक्टर प्रदीप – निर्विरोध नव निर्वाचित सभापति ने सभी के सत्कार के लिए गाँव की व्यवस्था द्वारा आयोजित लंच लेने का आग्रह किया। व्यवस्था धीरेन्द्र के घर पर थी। खीर झोर के भोजन बैठा कर धीरेन्द्र ने खिलाया। सकोरा भर भर के खीर खिलाई गयी। सामूहिक भोजन तथा आग्रह आतिथ्य, अविस्मरणीय आनंद ।

होलीपुरा भ्रमण में स्वामी हरिहरानंद जी की गुफा तो जाना ही था। गुफा खुलवा कर दर्शन किए। साक्षात देव भूमि है– मनोरम दृश्य पेड़, पौधे, मोर, पक्षी, तोता। एक जीवन्त देव भूमि का अनुभव हुआ। स्वामीजी के दर्शन लाभ से आत्मा तृप्त हो गयी। अतिथियों को भी देव भूमि के इतिहास की अनुभूतियों से अवगत कराया तथा इस अनुभूति को शब्दों में पिरोना असम्भव है।

इस मध्य जिस विशेष प्रयोजन के कारण नोएडा से अतिथि साथ में आये थे, वह क्षण भी आ गए और दोपहर के तीन बज गये। मण्डी से प्रदीप के घर से ढोलक की थाप आवाज आने लगी। रंग बिरंगा पंडाल, ढोलक पर थे – संजय,राकेश,मनीष – क्या है संयोग सारे होलिपुरा के वासी। पुरा, तालगाँव, भदावर क्षेत्र के तथा अन्य शहरों से पहुँचे स्वजातीय बाँधव लोग और शुरु हो गया होली गायन ।

विधिपूर्वक तथा क्रमबध तरीक़े से अनेक राग काफी, पीलू, चाल, चलती, लेद, दीपचंदी, विहाग और विशेष रूप से धमार। आनन्द की कोई सीमा नही थी, एक से एक नई चालें मुतिया झल काबे धन बैठी दुलीचा धमार। गाओं रस बादि की ड़र डरिये

ब्रिटेन से आए कुछ विदेशी पर्यटक भी बड़े बड़े कैमरे लेकर इस आनंद में तल्लीन हुए और इन अनमोल क्षणों को कैमरे में कैद कर के ले गये। हल्की भंग वाली ठंडाई , दिलकुसाल, समोसे लेकर चोपाई उठी ऊपरतन के लिए। रास्ते में अपने पैतृक स्थान पर भी नज़र गयी तीन बड़े बड़े मोर आंटियों और कंगूरों पर सूने घर को आबाद कर रहे थे। मन मलीन हुआ। होलीपुरा के इतिहास के प्राचीन परंपराओं का साक्षी हलधर दरवाजा करीब 400 साल पुराना है। हमने बचपन में यहाँ काठ और लोहे का टूटा हुआ विशालकाय दरवाजा देखा है। उसी के बगल में चबूतरे पर पंडाल लगा था। यहां भी धमार और चैती चमकी। यहाँ रज्जन चाचा, भरत भाई साहब, आनन्द भाई सभी थे। जाने कब अन्धेरा होने लगा सान्ज़ भई दिन चलो मुदन को, गाँव से विदा लेने का समय आ गया। पिनहाट की गुझियाँ,गरम समोसे, ठंडाई ले कर लौट दिये।

रास्ते में चर्चा होलीपुरा गाँव और इसके गायन की हो रही थी।श्रीमती लिली जी बोली – इतना सब था पर कहीं भी गन्दगी नाममात्र को भी नही दिखी। मन प्रसन्न हुआ। फिर पूछा क्या सारे गाँव ऐसे ही होते हैं। अन्य का मालूम नही, पर होलिपुरा की बात ही कुछ और है। शायद इसलिए तखत गाँव कहलाता है।

होली बाबा की जय

***

लालता प्रसाद (सिद्धपुर) ने अपने पुत्र तपन एवं पुत्रवधु मौली के विवाह के उपलक्ष्य मैं रुपए 1100 चतुर्वेदी महासभा को सप्रेम भेंट किये । महासभा सदस्य डॉ राकेश चतुर्वेदी ने नवदम्पति को शुकमनाएँ दी। र.क्र.11695

***

श्री दुष्यंत चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती आभा चतुर्वेदी–श्री सतीश चतुर्वेदी, पूर्व केबिनेट मंत्री महाराष्ट्र सरकार (होलीपुरा/नागपुर) के महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य चयनित हुए। हार्दिक बधाई।

***

श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी पत्नी श्री विक्रम चतुर्वेदी (मुंबई) सुपुत्री श्री पुरुषोत्तम चतुर्वेदी (मुंबई) पौत्रवधू स्व. श्री छोटेलाल जी (पुरा/पूर्व अध्यक्ष लखनऊ) राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित हुई। हार्दिक बधाई।

***

अपर न्यायमूर्ति श्री राहुल चतुर्वेदी को इलाहाबाद हाई कोर्ट का स्थाई न्यायमूर्ति नियुक्त किया गया। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संविधान के अनुच्छेद 217 (1) में प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए यह आदेश दिया। हार्दिक बधाई।

***

अन्नपूर्णा सहायतार्थ

1. श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, महामंत्री, महासभा (होलीपुरा/नोयडा) ने अपनी पत्नी स्व. श्रीमती नीरज जी की स्मृति में महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- रुपये प्रदान किये।

(र.क्र.11381)

2. श्री विष्णुकांत जी,संरक्षक, महसभा (नोयडा) ने अपने माता-पिता स्व. श्रीमती माया देवी- स्व. श्री उपेंद्र नाथ जी की स्मृति में महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- रुपये प्रदान किये।

(र.क्र.11682)

3. श्री राकेश चतुर्वेदी (मथुरा) ने अपने माता-पिता स्व. श्रीमती पदमा चतुर्वेदी - स्व. श्री गोकुल चंद्र चतुर्वेदी की स्मृति में महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- रुपये प्रदान किये।

(र.क्र.11683)

4. सुधीर चतुर्वेदी (नोयडा) ने अपनी भाभी श्रीमती रीता चतुर्वेदी (मुंबई) की स्मृति में महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- रुपये प्रदान किये।

(र.क्र.11694)

5. ऋषि चतुर्वेदी (तरसोखर/नोयडा) ने महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- रुपये प्रदान किये।

(र.क्र.11691)

6. गोपाल कृष्ण जी (नोयडा) ने अपने नाती-नातिन आहना, अथर्व, अबीर,असीम की ओर से महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- रुपये प्रदान किये प्रदान किये।

(र.क्र.11688)

दिनाँक 27.02.2020 को दिल्ली कानपुर के बीच स्वर्ण शताब्दी एक्सप्रेस में डीटीएस रोहित चतुर्वेदी द्वारा रुपयों डॉलर व चांदी के सिक्कों से भरे एक बैग को सुरक्षित रूप से यात्री को वापस लौटाए जाने पर उनकी ईमानदारी व कर्तव्य परायणता के लिए मंडल रेल प्रबंधक व सीनियर वाणिज्य प्रबंधक इलाहाबाद द्वारा पुरस्कृत किया गया। हार्दिक बधाई।

***

श्री सुनील चतुर्वेदी (मुंबई) 100 प्रथम श्रेणी क्रिकेट मैचों में रेफरी की भूमिका निभाने वाले देश के प्रथम व्यक्ति बने। आप अब तक 100 प्रथम श्रेणी मैचों के अलावा लिस्ट ए के के 69, टी20 के 49 लिस्ट आईपीएल समय बीसीसीआई द्वारा प्रायोजित अन्य 69 मुकाबलों में रैफरी की भूमिका निभा चुके हैं। प्रथम श्रेणी सहित क्रिकेट के अन्य प्रारूपों के 285 मुकाबले में मैच रेफरी की भूमिका निभा चुके हैं। बतौर विकेटकीपर खिलाड़ी आपने 13 साल के कैरियर में 7 शतकों के साथ 3864 रन बनाए और 88 कैच एवं 17 स्टंपिंग के साथ 105 बल्लेबाजों को अपना निशाना बनाया। आपने 13 वर्ष उत्तर प्रदेश क्रिकेट टीम का नेतृत्व किया। सन 1999 में बी सी सी आई द्वारा आपको रैफरी बनाया गया। हार्दिक बधाई।

नागपुर

शाखा सभा का होली मिलन समारोह दिनाँक 15 मार्च 2020 को आमदार निवास नागपुर में सांय 4 बजे से आयोजित किया गया। बड़ी संख्या में स्थानीय बान्धव व बहनें समारोह में उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त आसपास के शहरों जैसे सिवनी, वर्धा आदि से भी परिवारों के आकर शामिल होने से इस समारोह की रौनक कई गुना बढ़ गयी। सभी का उत्साह देखने लायक था। कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी बान्धवों का गुलाल व दुपट्टे (उत्तरी) से स्वागत किया गया व फूलों की होली खेली गई। इसके उपरांत ठंडाई व गरमा गरम पकोड़ों के साथ सभी ने भजन और होली गायन का भरपूर आनंद उठाया। हर वर्ष की तरह इस बार भी उपस्थित बुजुर्गों का सम्मान पुष्प-गुच्छ के साथ किया गया। इसके उपरांत नगर में नावंतुक परिवारों का स्वागत करते हुए उनका परिचय सभी से कराया गया। तदुपरान्त अध्यक्ष श्री अरुण जी ने शाखा सभा से संबंधित विभिन्न विवरण प्रस्तुत करते हुए प्रस्ताव रखा कि शाखा-सभा का अपना एक स्वतंत्र कोष होना चाहिए। जिसके लिये हरेक परिवार से एक निश्चित सहयोग राशि प्रति वर्ष जमा करने का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को सभी उपस्थित सदस्यों के समर्थन के साथ पारित किया गया। इसके बाद हाउजी का खेल खेला गया। जिसका सभी ने खूब आनंद उठाया। तत्पश्चात सुरुचिपूर्ण भोजन के उपरांत सभी को आभार सचिव शारदा जी देते हुए कार्यक्रम का समापन हुआ।

दिवंगत स्वजन

* श्री कृष्ण कान्त चतुर्वेदी (मैनपुरी /अहमदाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 22/02/2020 को अहमदाबाद में हो गया।

×××

* श्रीमती आशा चतुर्वेदी पत्नी श्री अशोक चतुर्वेदी (पिनाहट / भोपाल) का स्वर्गवास 23.02.2020 को भोपाल में हो गया।

×××

* श्रीमति रानी देवी पत्नि स्व. हरदेव सहाय (चंद्रपुर/दिल्ली) का स्वर्गवास 94 वर्ष की अवस्था में दिल्ली में हो गया है।

×××

* श्रीमती रम्भा चतुर्वेदी पत्नी स्व. हेमचंद चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 26/02/2020 को हो गया।

×××

* श्रीमती उर्मिला पत्नी श्री नवल किशोर चतुर्वेदी (हिंडौन/जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 27/02/2020 को हो गया। आप चन्द्रपुर निवासी स्व. मधुसूदन लाल जी की पुत्री थी।

×××

* श्री हुकुम चंद चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकात्ता/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 26.02.2020 को आगरा में हो गया।

×××

* श्रीमती आजाद चतुर्वेदी पत्नी स्व विनोद चतुर्वेदी (हाथरस / चंडीगढ़) का स्वर्गवास दिनाँक 3 मार्च 2020 को हो गया।

×××

* श्री प्रताप नारायण चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री दामोदर दास चतुर्वेदी (होलीपुरा/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 3 मार्च 2020 को आगरा में हो गया।

×××

* श्री राधे कृष्ण चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री महेश प्रसाद (करेंटी/इलाहाबाद) का स्वर्गवास दिनांक 4 मार्च 2020 को गुड़गांव में हो गया।

×××

* श्रीमती आरती चतुर्वेदी पत्नी श्री रविंद्र नाथ मिश्रा (मुन्नू जी) मैनपुरी का स्वर्गवास 23 फरवरी 2020 को मैनपुरी में हो गया।

×××

* श्रीमती निशा चतुर्वेदी पत्नी स्व. अजीत चतुर्वेदी (करहल) का स्वर्गवास दिनाँक 5 मार्च 2020 को हो गया।

×××

* श्री रवि चतुर्वेदी (मथुरा/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 6 मार्च 2020 को ग्वालियर में हो गया।

×××

* श्री नरेन्द्र चतुर्वेदी (हिंडौन/ ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 6 मार्च 2020 को गया।

×××

* श्रीमती किरण चतुर्वेदी पत्नी श्री अरुण चतुर्वेदी (उदयपुर) का स्वर्गवास दिनांक 5.3.2020 को उदयपुर में हो गया।

×××

* श्री ब्रजेंद्र नाथ चौबे, घुर्रे बाबू (आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 9 मार्च 2020 को आगरा में हो गया।

×××

* श्री प्रदीप जी (कमतरी/लखनऊ) का स्वर्गवास 10 मार्च 2020 को लखनऊ में हो गया।

×××

* श्री रमेश चतुर्वेदी पुत्र स्व.श्री छैलबिहारी चतुर्वेदी (कोटा) का स्वर्गवास दिनाँक 10.3.2020 को कोटा में हो गया।

×××

* श्रीमती देवकी चतुर्वेदी पत्नि स्व. सुरेन्द्र नाथ जी चतुर्वेदी (मथुरा/ आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 16 मार्च 2020 को 90 वर्ष की आयु में हो गया है। आप डॉ निखिल चतुर्वेदी की माताजी थीं।

×××

* श्री मलय चतुर्वेदी सुपुत्र श्री शरद चन्द्र चतुर्वेदी (करहल/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 7 मार्च 2020 को भोपाल में हो गया ।

×××

* श्रीमती सरिता पत्नी श्री छविनाथ चतुर्वेदी (चंद्रपुर/इंदौर) का स्वर्गवास दिनाँक 20.03.2020 को इंदौर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।